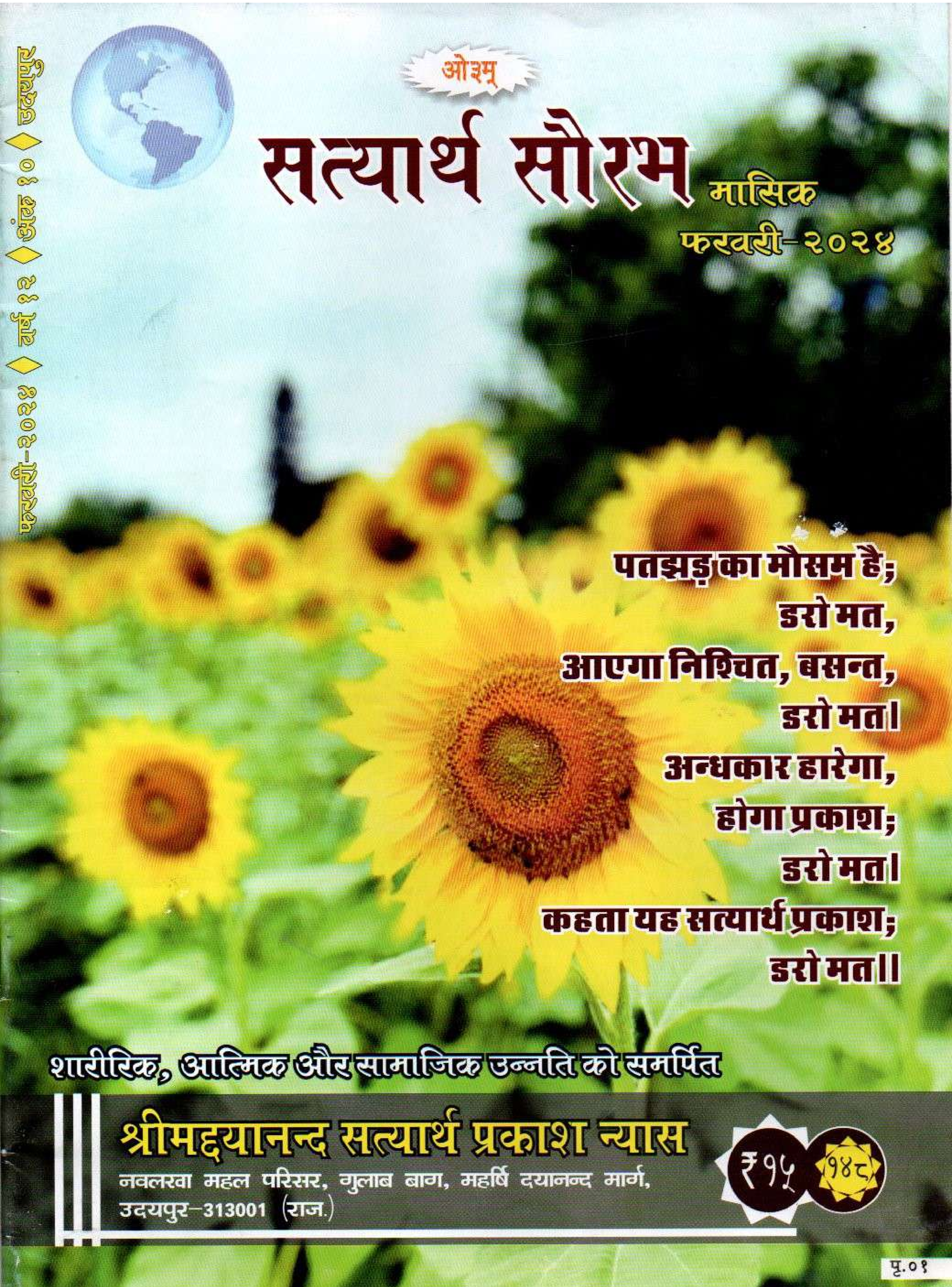

ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

मासिक

फरवरी-२०२४

फरवरी-२०२४ ◆ वर्ष १२ ◆ अंक १० ◆ उदयपुर

पतझड़ का मौसम है;
डरो मत,
आएगा निश्चित, बसन्त,
डरो मत।
अन्धकार हारेगा,
होगा प्रकाश;
डरो मत।
कहता यह सत्यार्थ प्रकाश;
डरो मत॥

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर-313001 (राज.)

₹१५

१४८

हर समय स्वाद ही स्वाद
MDH मसाले
महाशय राजीव गुलाटी
चेयरमैन, महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लि०
MDH मसाले
सेहत के रखवाले असली मसाले सच - सच
महाशय धर्मपाल गुलाटी
संस्थापक चेयरमैन, महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लि०
GARAM MASALA
SAMBHAR MASALA
CHANA MASALA
KITCHEN KING
SHAHI PANEER MASALA
KASHMIRI MIRCH
CHUNKY CHAT MASALA
RAJMAH MASALA
SABZI MASALA
DEGGI MIRCH
PEACOCK KASOORI METHI
PAV BHAJI MASALA
VEG BIRYANI MASALA
KARAHI PANEER MASALA
JAL JEERA MASALA
For More Information Visit us on :
mdhspicesofficial
mdhspicesofficial
mdhspicesofficial
SpicesMdh
www.mdhspices.com
SCAN FOR MDH ORIGINAL RECIPES

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ

डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल

डॉ. महावीर मीमाँसक

आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय

डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री

डॉ.सोमदेव शास्त्री

डॉ. रघुवीर वेदालंकार

आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक

अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक

भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग (ग्राफिक्स डिजाईनर)

नवनीत आर्य (मो. 9314535379)

व्यवस्थापक

भँवर लाल गर्ग

सहयोग	भारत	विदेश
संरक्षक	- 11000 रु.	$ 1250
आजीवन	- 1500 रु.	$ 300
पंचवर्षीय	- 600 रु.	$ 125
वार्षिक	- 150 रु.	$ 30
एक प्रति	- 15 रु.	$ 10

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया मेन ब्रांच दिल्ली गेट, उदयपुर खाता संख्या : 310102010041518 IFSC CODE- UBIN 0531014 MICR CODE- 313026001 में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३१२४
माघ कृष्ण द्वादशी
विक्रम संवत्
२०८०
दयानन्दाब्द
१९९

सत्यार्थ सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

February - 2024

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)

कवर 2 व 3 (भीतरी आवरण) रंगीन 5000 रु.

अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	3000 रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	2000 रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	1000 रु.

समाचार २९

हलचल ३०

०४ वेद सुधा
०६ सत्यार्थ मित्र बनें
११ दान की अपील
१२ देव शयनी और देव उठनी ......
१४ ईश्वर ने वेद-ज्ञान क्यों दिया?
२० धार्मिक कर्मकाण्ड और आर्य समाज
२२ धर्म की आत्मा और शरीर
२४ ऋषि-दर्शन
२६ स्वास्थ्य- शिशिर ऋतु में स्वास्थ्य
२८ कथा सरित- कहानी दयानन्द की

स्वामी श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - १२ अंक - १०

द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर **मुद्रण**

प्रकाशक

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास

सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर (राजस्थान) 313001

(0294) 4017298, 09314535379, 7976271159

www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा निदेशक- मुकेश चौधरी, चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

ओ३म्

वेद सुधा

भगवान् की वाणी का वरण कर

अपक्रामन्यपौरुषेयाद् वृणानो दैव्यं वचः।
प्रणीतीरभ्यावर्तस्व विश्वेभिः सखिभिः सह।। - अथर्व. ७/१०५/१

पौरुषेयात्- मनुष्य के कहे (वचन) से, **अपक्रामन्**- हटता हुआ (और), **दैव्यम्**- दैव्य=देवप्रणीत, **वचः**- वचन, वेदवाणी को, **वृणानः**- स्वीकार करता हुआ, **विश्वेभिः सखिभिः सह**- सम्पूर्ण मित्रों के साथ, **प्रणीतिः**- (वेदोक्त) उत्तम नीतियों को, श्रेष्ठ आचार-व्यवहारों को, **अभि आवर्त्तस्व**- तू सब ओर बरत।

व्याख्या

मनुष्य अल्पज्ञ है, अल्पशक्ति है। उसकी इस अल्पज्ञता के कारण उसे भ्रम हो सकता है। कोई मनुष्य धूर्त होता है, उसमें दूसरों को ठगने की प्रवृत्ति होती है। भ्रान्त मनुष्य का अनुसरण करनेवाला भ्रम की खाई में गिर सकता है। धूर्त, प्रतारक, वंचक, ठग के फन्दे में फँसकर मनुष्य अपना सर्वस्व गँवा बैठता है, अतः इनका संसर्ग या अनुसरण भयावह है, खतरनाक है। इस कारण वेद कहता है- **अपक्रामन् पौरुषेयात्**=पुरुषप्रणीत वचन से परे हट।

मनुष्य को सारा ज्ञान दूसरों से मिलता है। बोलना तक मनुष्य दूसरों के अनुकरण से सीखता है।भारत में उत्पन्न बालक यदि चीन में भेज दिया जाए और उसका भरण-पोषण वहाँ हो, तो वह वहाँ की भाषा बोलेगा, क्योंकि उसको चारों ओर वही भाषा सुनने को मिलती है। इससे सिद्ध हुआ कि मनुष्य में नैसर्गिक ज्ञान के साथ वैनयिक शिक्षा से प्राप्त होने वाला ज्ञान भी है। हमने यह ज्ञान अपने गुरुओं से लिया। उन्होंने अपने गुरुओं से- इस प्रकार आरम्भ के मनुष्य सबके गुरु सिद्ध होते हैं, किन्तु उन्होंने ज्ञान किससे प्राप्त किया? क्या अपने-आप वे ज्ञानी बन गये? यदि ऐसा होता, तो आज भी पाठशाला, विद्यालय, कलाशाला, महाविद्यालय, विश्वविद्यालय न खुलते, अतः मानना चाहिए कि उन्होंने भी किसी से ज्ञान प्राप्त किया होगा, चूँकि वे सबसे प्राथमिक मनुष्य थे, इसलिए कोई मनुष्य तो उनका शिक्षक हो नहीं सकता, अतः भगवान् ने ही ज्ञान दिया। ऋग्वेद (१०/७१) में इस ज्ञान-दान का विशद् वर्णन है। योगदर्शन (१/२६) में भगवान् को पूर्वों का भी गुरु कहा गया है-

स एष पूर्वेषामपि गुरुः कालेनानवच्छेदात्।

'वह पहलों का भी गुरु है, क्योंकि वह काल की परिधि से बाहर है।'

भगवान् के उस उपदेश का नाम वेद काल की परिधि से बाहर है।

भगवान् सर्वज्ञ है, जैसाकि योगदर्शन में कहा गया है-

तत्र निरतिशयं सर्वज्ञबीजम्। - योगदर्शन १/२५

'उसमें सर्वज्ञता की पराकाष्ठा है।'

संसार के सब पदार्थों का यथार्थ बोध सर्वज्ञ परमात्मा ही करा सकता है, जैसाकि यजुर्वेद (४०/८) में कहा है कि वह-

याथातथ्यतोऽर्थान् व्यदधाच्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः।

'अपनी अनादि जीवरूप प्रजाओं के लिए ठीक-ठीक पदार्थों का निर्माण कर यथार्थ ज्ञान देता है।'

सर्वज्ञ में भम्र नहीं हो सकता। प्रभु तो हमारा सदा उद्धार करते हैं। हम अपनी मूर्खतावश उनकी अवज्ञा कर अपना नाश कर लेते हैं। सर्वज्ञ दयालु में विप्रलिप्सा (ठगने की इच्छा) कहाँ? वह तो आप्तकाम हैं। अभिलाषाओं

(कामनाओं) के कारण मनुष्य में ठगने की भावना उत्पन्न होती है। भगवान् तो सदा सब जीवों के कल्याण की कामना करते हैं, अतः अपना कल्याण चाहनेवाले को-

वृणानो दैव्यं वचः- 'दैव्य वचन का वरण करनेवाला' होना चाहिए।

ऋग्वेद (१/३७/४) में आया है-

देवत्तं ब्रह्म गायत- देव (परमेश्वर) के दिये ब्रह्म (वेद) का गान करो।

यजुर्वेद (२६/२) में वेद को कल्याणी वाणी कहा गया है-

यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः।

'जैसे मैं इस कल्याणी वाणी का सब मनुष्यों के लिए उपदेश करता हूँ।'

वेदवाणी सचमुच कल्याणी है। सब मनुष्यों के लिए है। **जैसे प्रभु के रचे सूर्य-चन्द्र-हवा-पानी आदि पदार्थ सबके लिए हैं, वैसे प्रभु के रचे वेद में भी सबका अधिकार है।**

वेद सर्वज्ञ का वचन होने के कारण 'सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है।' वेद में ही वेदों को सब विद्याओं का निरुपण करनेवाला बतलाया गया है। यथा-

यस्मिन् वेदा निहित्ता विश्वरूपाः। - अथर्ववेद ४/३५/६

'जिसमें सबका निरूपण करनेवाले वेद रहते हैं।'

सर्वज्ञ और सर्वहितकारी भगवान् का वचन होने से इसमें उपदेश भी उत्तमोत्तम हैं। **कोई भद्दी, अशुद्ध, कुनीति, कुधर्म की बात है ही नहीं।** उसमें सारा धर्म का, धारण करने योग्य का वर्णन है। कणाद महर्षि ने इसी हेतु वेद को प्रमाण माना है-

तद्वचनादाम्नायस्य प्रामाण्यम्।। - वैशेषिक दर्शन १/१/३

धर्म का प्रतिपादक होने से वेद की प्रामाणिकता है।

इस उत्कर्ष के कारण भगवान् ने आदेश किया-

प्रणीतिरभ्यावर्तस्व- वेदोक्त उत्तम रीति-नीतियों को बरत।

क्या अकेले अकेले? न। वरन्,

विश्वेभिः सखिभिः सह- सब सखाओं के साथ।

अर्थात् वैदिक मण्डल बनाओ। सब मिलकर वेदानुसार आचरण करो। वेद (ऋग्वेद १०/१३७/७) में अन्यत्र कहा है-

मन्त्रश्रुत्यं चरामसि- वेदमन्त्र के अनुकूल हम आचरण करते हैं।

वेदानुकूल आचरण वेद पढ़े बिना नहीं हो सकता, अतः ऋषि ने आदेश किया-

'वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।'

परम धर्म का पालन न करने से मनुष्य गिर जाता है। इसी भाव को लेकर मनुजी ने कहा है-

योऽनधीत्य द्विजो वेदमन्यत्र कुरुते श्रमम्।
स जीवन्नेव शूद्रत्वमाशु गच्छति सान्वयः।। - मनुस्मृति २/१६८

जो द्विज वेद न पढ़कर दूसरे विषयों में परिश्रम करता है, वह इस जीवन में ही परिवार समेत शीघ्र शूद्र हो जाता है।

सब विद्याओं के मूल में जिसकी रुचि नहीं, प्रवृत्ति नहीं, वह शूद्र नहीं तो क्या है? दूसरे शास्त्र भी पढ़ो, किन्तु वेद को प्रधानता दो। यह शूद्रता=दुःखपूर्वक रुदन करने से बचने का अमोघ उपाय है। मनुष्य की वाणी में वह रस, आस्वाद कहाँ? जो दिव्य वेद की कल्याणी वाणी में है, अतः आ जन, आ और-

वृणानो दैव्यं वचः अभ्यावर्तस्व- 'प्रभु की दिव्य वाणी का वरण करता हुआ सब व्यवहार कर।'

ऋषि-मुनि कहते हैं, सब कार्य धर्मानुसार करने चाहिए। धर्म का ज्ञान, कर्त्तव्याकर्त्तव्य का बोध वेद से होता है। वैसे तो स्मृति, शिष्टाचार, भीतर की पुकार- ये सब धर्म के बोधक हैं, किन्तु सबसे प्रधान प्रमाण वेद है, जैसा मनुजी ने कहा है- **धर्मं जिज्ञासमानानां प्रमाणं परमं श्रुतिः।** धर्म को जानने की इच्छावाले के लिए श्रुति (वेद) परम प्रमाण है। सामान्य प्रमाण नहीं, वरन् परम प्रमाण है।

अतः **'वृणानो दैव्यं वचः प्रणीतिरभ्यावर्तस्व'** यह वैदिक आदेश अत्यन्त सुसंगत है।

स्मृत्योर्द्वैधे श्रुतिः प्रमाणम्। दो स्मृतियों में विरोध होने पर श्रुति प्रमाण है।

श्रुतिस्मृत्योर्विरोधे तु श्रुतिरेव गरीयसी।

श्रुति तथा स्मृति में विरोध होने पर श्रुति (वेद) ही अधिक माननीय है, अतः मनुष्य-वाक्य की अपेक्षा वेदवाक्य का वरण करना मंगलमय है।

संकलन कर्त्ता एवं भाष्यकार- वे. शा. श्री स्वामी वेदानन्दतीर्थ सरस्वती
सम्पादक- स्वामी जगदीश्वरानन्द सास्वती, साभार- स्वाध्याय-सन्दीप

❑❑❑

शोक समाचार

आर्य समाज श्रीगंगानगर के संरक्षक और हमारे बड़े भाई के तुल्य स्नेही आदरणीय श्री शुद्धबोध जी शर्मा संरक्षक आर्य समाज; श्रीगंगानगर की धर्मपत्नी श्रीमती इन्दिरा शर्मा जी के निधन का समाचार सुनकर अत्यन्त दुःख हुआ। हमारे श्रीगंगानगर के सेवाकाल में उनकी वात्सल्य पूर्ण आत्मीयता के केन्द्र में हम रहे थे। अनेक पृष्ठ, स्मृतियों के खुलते जा रहे हैं। परन्तु कुछ किया नहीं जा सकता, मनुष्य यहाँ आकर विवश है। अतः विधाता के इस निर्णय को स्वीकार करते हुए न्यास एवं सत्यार्थ सौरभ परिवार प्रभु से प्रार्थना करता है कि वे दिवंगत आत्मा को अपनी आनन्दमयी गोद में स्थान प्रदान करें और शोक संतप्त परिवार को इस वियोगजन्य पीड़ा को सहने की क्षमता प्रदान करें। - अशोक आर्य

सत्यार्थ मित्र बनें

न्यास के कार्यों को गति प्रदान करने के लिए 5100 रु. (पाँच हजार एक सौ) वार्षिक का सहयोग प्रदान करें।

आपका मात्र ५१०० रुपये वार्षिक का सहयोग न्यास के कार्य को अद्वितीय गति प्रदान कर सकता है।

हमारे अत्यन्त आत्मीय बन्धुजन!

इस अपील को मेरी व्यक्तिगत अपील कहिए अथवा न्यास की अपील समझिए। यह आप तक पहुँचे और आपकी आत्मीयता हमें प्राप्त हो, इसी नाते हम प्रथम बार अर्थ सहयोग का निवेदन कर रहे हैं।

आपको यह जानकारी होगी ही कि नवीन, आकर्षक प्रकल्पों का निर्माण कर न्यास सहस्रों लोगों तक वैदिक संस्कृति के मूल तत्त्वों को अग्रप्रसारित कर रहा है। सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, उदयपुर द्वारा आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा में वेद, वेद के प्रादुर्भाव, भारतीय ऋषियों के योगदान, योगिराज श्री कृष्ण और भगवान राम के पावन जीवन-चरित्र, मेवाड़ की माटी के गौरव महाराणा प्रताप, आर्यसमाज के रत्नों, भारत को स्वतन्त्रता दिलाने वाले क्रान्तिकारियों, सत्यार्थ प्रकाश चित्रावली एवं महर्षि दयानन्द के जीवन चरित्र के माध्यम से व संस्कार वीथिका के माध्यम से मानव निर्माण की पूरी योजना आगन्तुकों के सामने रखी जा रही है। इस क्रम में मानों महर्षिवर की संस्कार विधि मूर्तरूप में चित्रित हो गयी है।

वहीं उच्चतम गुणवत्ता के 3D थियेटर का निर्माण कर महापुरुषों के जीवन-चरित्र का दिग्दर्शन भी कराया जा रहा है। यहाँ यह अंकित करना आवश्यक है कि मुक्त हस्त से दिए हुए उदार अर्थ के सहयोग से भव्य संस्कार वीथिका परिसर व थियेटर का निर्माण माननीय सुरेश चन्द्र जी आर्य; अहमदाबाद और माननीय दीनदयाल जी गुप्त; कोलकाता के पवित्र सहयोग से हो पाया है एवं संस्कारों का निर्माण आर्यजनों के सामूहिक सहयोग से एकत्रित धन से हुआ है। परन्तु इनको गति देने के लिए, वर्ष में सारे प्रकल्प 365 दिन गतिशील रहें, इसके लिए आवश्यक है कि कुछ लोग आगे आएँ और प्रतिवर्ष अपना योगदान दें, इसीलिए आपसे यह निवेदन कर रहा हूँ। **मैं व्यक्तिगत रुप से अनुगृहीत होऊँगा अगर आप मात्र 5100 सौ रुपये प्रतिवर्ष देने का संकल्प लेंगे।** न्यास का एकाउन्ट नम्बर भी नीचे अंकित है। न्यास को प्रदत्त दान आयकर अधिनियम की धारा 80G के अन्तर्गत कर मुक्त है।

हमें आशा ही नहीं विश्वास है कि आप हमारी प्रार्थना को स्वीकार कर 5100 रुपये वार्षिक का यह अर्थ सहयोग प्रदान करने की कृपा करेंगे। **निश्चित मानिये आपके सहयोग से जो ऊर्जा और गति हमें मिलेगी वह लाखों लोगों तक वैदिक संस्कृति के उदात्त मूल्यों को सम्प्रेषित करने में मील का पत्थर साबित होगी।** निवेदक- अशोक आर्य, अध्यक्ष-न्यास

चैक श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, मेन ब्रांच, दिल्ली गेट, उदयपुर बैंक एकाउन्ट का विवरण : **AC. No. : 310102010041518, IFSC CODE- UBIN 0531014, MICR CODE- 313026001** में जमा करा कृपया सूचित करें।

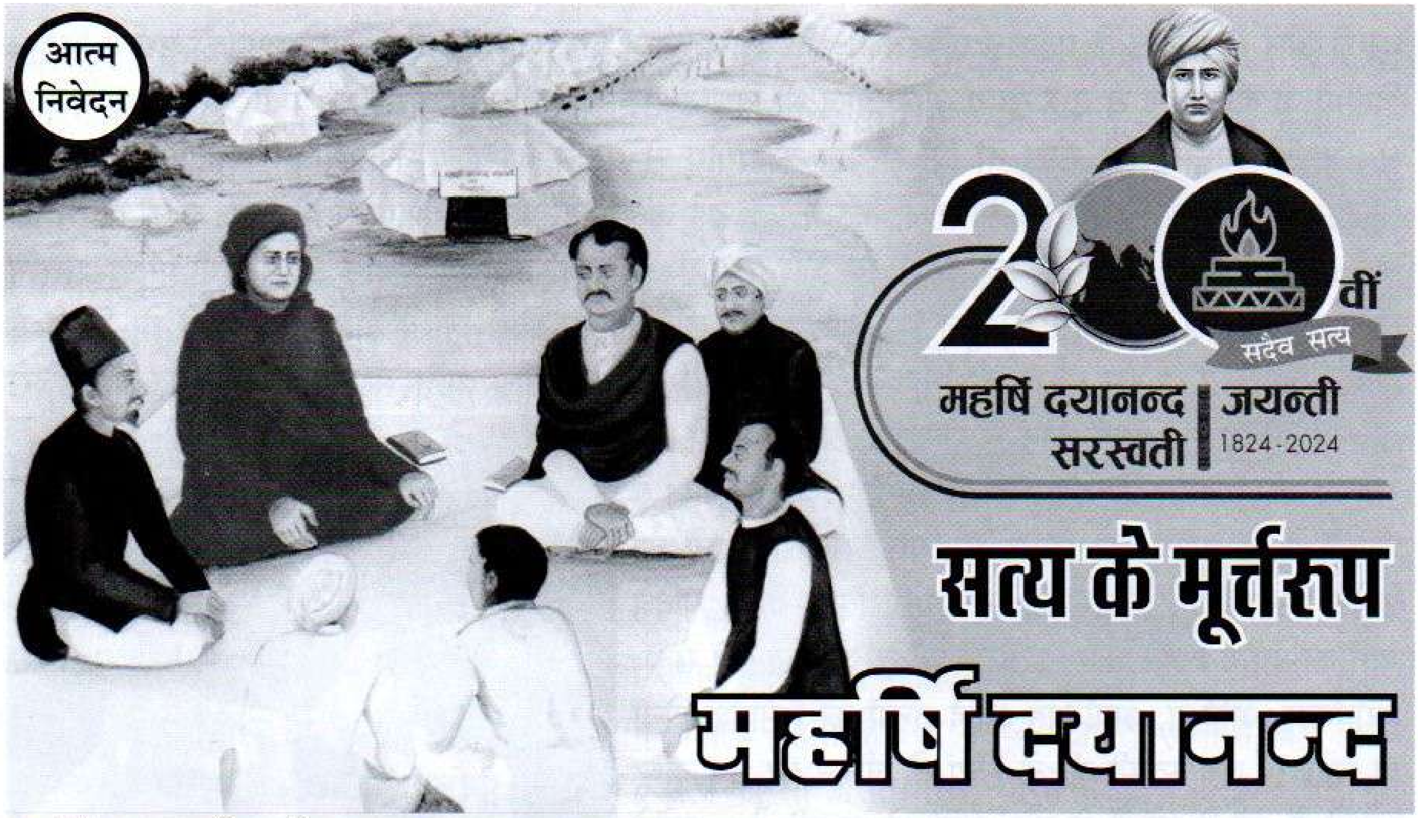

सत्य के मूर्त्तरूप महर्षि दयानन्द

ऋतं येमान ऋतमिद्वनोत्यृतस्य शुष्मस्तुरया उ गव्युः।
ऋताय पृथ्वी बहुले गभीरे ऋताय धेनू परमे दुहाते।। - ऋग्वेद ४/२३/१०

हे मनुष्यों! जो लोग मनुष्य के शरीर को प्राप्त होकर नियम से सत्य आचार, सत्य याञ्चा करके शीघ्र धार्मिक होते हैं, वे भूमि और सूर्य्य के सदृश सब की कामना की पूर्ति कर सकते हैं।

यहाँ वेद माता स्पष्ट करती है कि पृथ्वी पर रहने वाले सभी मनुष्य जब सत्य व्यवहार का आश्रय लेते हैं तो जिस शान्ति और समरसता का प्रादुर्भाव होता है उसी से सबके व्यवहार नियमों में चल रहे हैं। स्मरण रखें कि **इस गए गुजरे समय में भी सत्य का आश्रय लेने वालों की अपेक्षा असत्यवादियों की संख्या नगण्य है।** सत्य का महत्व इतना है कि झूंठ बोलने वाला भी अपने असत्य को सत्य कहकर ही परोसता है। सत्य मनुष्य जीवन का केन्द्र बिन्दु है।

ऐसे ही सत्य व्यवहार की कामना लेकर वेद-निर्देश को जन-जन तक पहुँचाने के उद्देश्य से एक महामानव का प्रादुर्भाव इस धरा पर हुआ जिसे हम महर्षि दयानन्द के नाम से जानते हैं।

महर्षि दयानन्द का व्यक्तित्व असाधारण था। अगर विगत दो चार शताब्दियों की बात करें तो ऐसा युग पुरुष देखने में नहीं आता। हम ऐसा नहीं कहना चाहते इस मध्य कोई युग पुरुष नहीं हुआ, कोई महापुरुष नहीं हुआ। बहुत से हुए। और उन्होंने अपने-अपने प्रकार से समाज में जागृति और उन्नति लाने के प्रयास किए। परन्तु कहा जा सकता है कि वे प्रयास समग्र नहीं थे। **महर्षि दयानन्द के व्यक्तित्व कृतित्व पर जब हम विवेचनात्मक दृष्टि डालते हैं तो स्पष्ट होता है कि उनकी सोच समग्र थी।** उनके मन में अपने मन्तव्यों को लेकर कोई ऊहापोह नहीं थी। इसी कारण जब कि अनेक महापुरुषों के चिन्तन तथा लेखन में विरोधाभास मिलता है स्वामी जी के विचारों में लेशमात्र भी विरोधाभास नहीं मिलता। उनके विचार व्यक्ति को अपनी स्वयं की, अपने परिवार की, अपने समाज की, अपने देश की और न केवल विश्व की वरन् साथ-साथ पर्यावरण और मानवेतर प्राणियों की भी उन्नति की प्रेरणा देते हैं।

वे आदर्शवादी होते हुए भी उपयोगितावादी हैं। जहाँ एक ओर वे गुजराती थे, गुजराती उनकी मातृभाषा थी, वहीं

दूसरी ओर वे संस्कृत के प्रकाण्ड पण्डित थे और जिस प्रकार प्रायः पण्डित लोग अपने आपको मूर्धन्य विद्वान् दिखाने के दृष्टिकोण से उस समय और आज भी क्लिष्ट संस्कृत का प्रयोग करते थे, महर्षि इसके पक्ष में नहीं थे। महर्षि दयानन्द की सोच थी कि संस्कृत के प्रयोग से अपने पाण्डित्य की स्थापना आवश्यक नहीं है, आवश्यक यह है के वे जो कुछ भी बोलें, कहें, लिखें, वह जनता जनार्दन की भाषा में हो ताकि वे उसको समझ सकें। लिखना तभी सार्थक है जब वह पाठक की समझ में आ जाय। इसलिए उन्होंने अपने सभी प्रमुख ग्रन्थ न गुजराती में लिखे, न पूर्णतः संस्कृत में लिखे, बल्कि लोक भाषा, जिसे कि वे आर्यभाषा कहते थे, हिन्दी में लिखे। यह कार्य या इस प्रकार की सोच कोई क्रान्तिकारी व्यक्तित्व वाला व्यक्ति ही कर या रख सकता है जिसे अपनी प्रसिद्धि से अधिक लोक कल्याण की अभिलाषा हो।

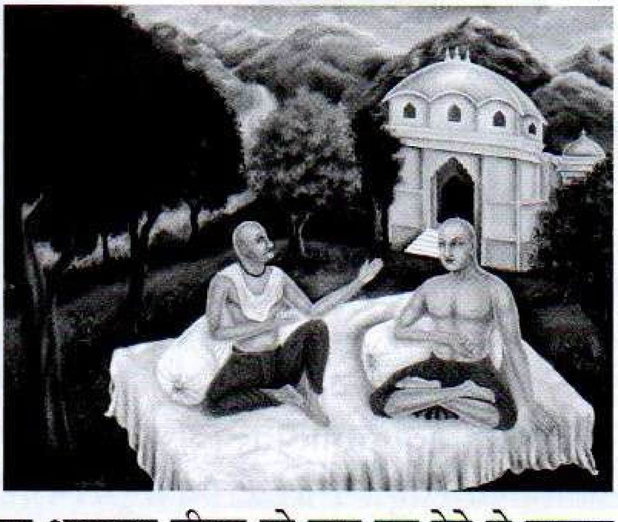

साधनों की पवित्रता में दयानन्द का अगाध विश्वास था। वे चाहते थे कि साध्य की सिद्धि के लिए शुद्ध संसाधनों का प्रयोग किया जाए, शुद्ध मार्ग का प्रयोग किया जाए, पवित्र मार्ग का प्रयोग किया जाए। इसलिए व्यक्ति के जीवन में सत्य, परोपकार, अहिंसा, अपरिग्रह आदि तत्त्वों का समावेश होना ही चाहिए। जब स्वामी जी के स्वयं के जीवन पर हम दृष्टि डालते हैं, तो देखते हैं वे स्वयं सत्य के पुजारी थे। उन्होंने कभी भी जीवन में असत्य बोल करके समझौता नहीं किया, चाहे उनके सामने कितने ही प्रलोभन आए, यहाँ तक कि घातक आक्रमण जीवन को नष्ट कर देने के प्रकरण आए, उन्होंने सत्य कथन से कभी अपने आपको विरत नहीं किया। ऊखीमठ के महन्त ने उनको कहा कि वे उनके शिष्य बन जाएँ तो मठ की अपार सम्पत्ति उनकी हो जाएगी। तो ऋषि दयानन्द को एक सेकण्ड भी यह कहने में नहीं लगा कि महाराज इससे तो अधिक सम्पत्ति मैं अपने स्वयं के घर पर छोड़ करके आया हूँ। **मुझे सम्पत्ति की अभिलाषा नहीं, बल्कि सत्यमार्ग पर चलने की अभिलाषा है।**

उदयपुर के महाराणा सज्जनसिंह जी ने जब एक बार परीक्षा लेने के निमित्त ही सही स्वामी जी के समक्ष प्रस्ताव रखा कि आप मूर्तिपूजा का मण्डन न करें परन्तु केवल खण्डन करने से अपने आपको विरत कर लें तो एकलिंगजी की गद्दी जिसके कि वे दीवान हैं उसका अधिष्ठाता उनको बना देंगे और उसकी अपार सम्पत्ति वे अपने वेदभाष्य आदि कार्यों में उपयोग कर सकेंगे। इस पर स्वामी जी ने उत्तर दिया कि- 'राजन! तुम्हारी बात न मानकर तो मैं एक दौड़ में तुम्हारे राज्य से बाहर निकल जाऊँगा, परन्तु सत्य की बजाय असत्य कथन करके परमपिता परमेश्वर के राज्य से मैं कहा जाऊँगा?

जब श्रीमहाराज जोधपुर जा रहे थे, तो लोगों ने उनको बहुत कहा कि आप जोधपुर मत जाइए। जोधपुर के लोग शुष्क हैं। आप सत्य बोलने से रुकेंगे नहीं। वहाँ आपके जीवन का घात भी हो सकता है। परन्तु ऋषि दयानन्द का जीवन तो सत्य के प्रचार के लिए था। सत्य के कथन के लिए था। अतः वे उनकी बात न मानकर जोधपुर गए। और हुआ भी वही जिसकी आशंका व्यक्त की गयी थी। एक षड्यंत्र के तहत वहाँ उनको विष दिया गया और उनको महाप्रयाण करना पड़ा। **स्वामी जी का कथन था कि 'अगर कोई उनकी उँगलियों की बत्तियाँ बनाकर के भी जला दे तो भी वे सत्य कथन से विरत नहीं रहेंगे।'** ऐसा सत्यव्रती संसार में विरला ही होगा। उन्होंने जब आर्य समाज के नियमों को लिखा, तो प्रथम पाँच नियमों में सत्य शब्द अवश्य आया है। महर्षि दयानन्द ने अपने प्रमुख ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में जगह-जगह अपने जीवन को सत्य से समाविष्ट करने

और सदैव सत्य का ही प्रयोग करने की बात कही है। वे लिखते हैं कि **'सत्योपदेश करना ही मनुष्य का मुख्य कार्य है।'** सत्य से अपने जीवन को प्रकाशित करने के पश्चात् उसी सत्य के प्रकाश में उन्होंने समाज के उन्नयन का प्रयास किया।

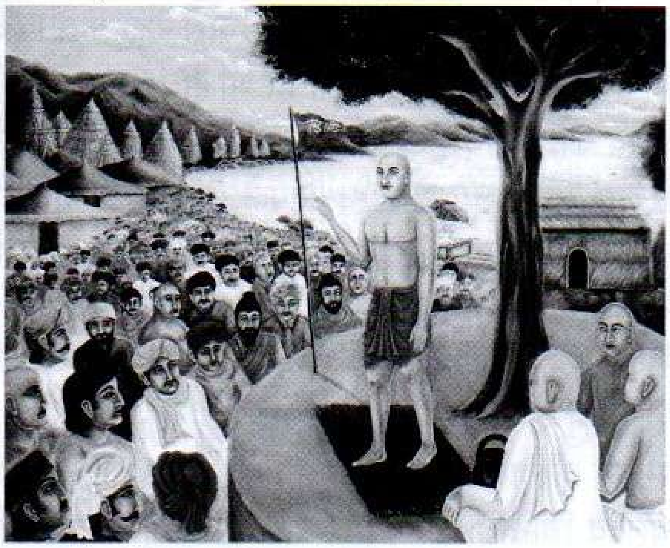

सत्य के प्रति महर्षि का अनुराग स्पष्ट हो जाता है जब हम सत्यार्थ प्रकाश और आर्य समाज के नियमों को देखते हैं। सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका में ऋषि लिखते हैं-

मेरा इस ग्रन्थ के बनाने का मुख्य प्रयोजन सत्य-सत्य अर्थ का प्रकाश करना है, अर्थात् जो सत्य है उस को सत्य और जो मिथ्या है उस को मिथ्या ही प्रतिपादन करना सत्य अर्थ का प्रकाश समझा है। वह सत्य नहीं कहाता जो सत्य के स्थान में असत्य और असत्य के स्थान में सत्य का प्रकाश किया जाय। किन्तु जो पदार्थ जैसा है, उसको वैसा ही कहना, लिखना और मानना सत्य कहाता है। जो मनुष्य पक्षपाती होता है, वह अपने असत्य को भी सत्य और दूसरे विरोधी मतवाले के सत्य को भी असत्य सिद्ध करने में प्रवृत्त होता है, इसलिए वह सत्य मत को प्राप्त नहीं हो सकता। **इसीलिए विद्वान् आप्तों का यही मुख्य काम है कि उपदेश वा लेख द्वारा सब मनुष्यों के सामने सत्याऽसत्य का स्वरूप समर्पित कर दें,** पश्चात् वे स्वयम् अपना हिताहित समझ कर सत्यार्थ का ग्रहण और मिथ्यार्थ का परित्याग करके सदा आनन्द में रहें।

महर्षि दयानन्द का विश्वास था कि मनुष्य का नैसर्गिक झुकाव सत्य की ओर है क्योंकि यही सरल मार्ग है जैसा कि वेद कहता है- **सुगा ऋतस्य पन्थाः** (ऋग्वेद ८/३१/१३) **अर्थात् सत्य के मार्ग सुगम हैं।** इसीलिए महर्षि आगे लिखते हैं-

मनुष्य का आत्मा सत्याऽसत्य का जानने वाला है तथापि अपने प्रयोजन की सिद्धि, हठ, दुराग्रह और अविद्यादि दोषों से सत्य को छोड़ असत्य में झुक जाता है। परन्तु इस ग्रन्थ में ऐसी बात नहीं रक्खी है और न किसी का मन दुखाना वा किसी की हानि पर तात्पर्य है, किन्तु जिससे मनुष्य जाति की उन्नति और उपकार हो, सत्याऽसत्य को मनुष्य लोग जान कर सत्य का ग्रहण और असत्य का परित्याग करें, **क्योंकि सत्योपदेश के विना अन्य कोई भी मनुष्य जाति की उन्नति का कारण नहीं है।** (सत्यार्थप्रकाश)

वस्तुतः वेद की शिक्षाओं से ही दयानन्द का जीवन संचालित था। सत्य इन शिक्षाओं का केन्द्रीय बिन्दु है। हम यहाँ ऋग्वेद के दशवें मण्डल के सैतीसवें सूक्त के दूसरे मन्त्र को उद्धृत कर रहे हैं। इसका भाष्य आर्याभिविनय में महर्षि ने जो किया है उस पर उनका दृढ विश्वास था इसीलिए सत्य कथन के फलस्वरूप कितने ही घोर संकट उनके समक्ष आये वे कभी लेशमात्र भी विचलित नहीं हुए। मन्त्र तथा उसका अर्थ इस प्रकार है-

सा मा सत्योक्तिः परि पातु विश्वतो द्यावा च यत्र ततनन्नहानि च।
विश्वमन्यन्नि विशते यदेजति विश्वाहापो विश्वाहोदेति सूर्यः॥ - ऋग्वेद १०/३७/२

हे सर्वाभिरक्षकेश्वर! **(सा मा सत्योक्तिः)** आपकी सत्य- आज्ञा, जिसका हमने अनुष्ठान किया है, वह **(विश्वतः, परिपातु)** हमको सब संसार से सर्वथा पालन से युक्त और सब दुष्ट कामों से सदा पृथक् रक्खे, जिससे हमको अधर्म करने की इच्छा भी कभी न हो **(द्यावा च)** और सदा दिव्य सुख से युक्त करके हमारी यथावत् रक्षा करे। **(यत्र)** जिस दिव्य सृष्टि में **(अहानि)** सूर्यादिकों को दिवस आदि होने के निमित्त **(ततनन्)**

आपने ही विस्तारे हैं, वहाँ भी हमारा सब उपद्रवों से रक्षण करो। **(विश्वमन्यत्)** आपसे अन्य [भिन्न] विश्व अर्थात् सब जगत् जिस समय आपके सामर्थ्य से [प्रलय में] (निविशते) प्रवेश करता है [सब कार्य कारणात्मक होता है], उस समय में भी आप हमारी रक्षा करो। **(यदेजति)** जिस समय यह जगत् आपके सामर्थ्य से चलित होके उत्पन्न होता है, उस समय भी सब पीड़ाओं से आप हमारी रक्षा करें। **(विश्वाहापो, विश्वाहा)** जो-जो विश्व का हन्ता [दुःख देनेवाला] उसको आप नष्ट कर देओ, क्योंकि आपके सामर्थ्य से सब जगत् की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय होती है, आपके सामने कोई राक्षस [दुष्टजन] क्या कर सकता है, क्योंकि आप सब जगत् में उदित [प्रकाशमान] हो रहे हो कृपा करके हमारे हृदय में भी सूर्यवत् प्रकाशित होओ, जिससे हमारी अविद्यान्धकारता सब नष्ट हो।

सर्वशक्तिमान ईश्वर और उसके नियमों के प्रति श्रद्धा का अनुपम दृष्टान्त यह भाष्य है। **सत्य बोलने वाले की रक्षा प्रभु करता है फिर भय कैसा?**

स्मरण कीजिए काशी की घटना का। एक ओर दयानन्द अकेला और दूसरी ओर काशी के ४० पण्डित। भक्त बलदेव चिन्तित था। क्या होगा? ऋषि अविचलित भाव से बोले कि 'योगियों का निश्चित सिद्धान्त है कि सत्य का सूर्य अन्धकार की सेना पर अकेला ही विजय पाता है। जो पक्षपातरहित होकर ईश्वराज्ञानुकूल सत्य का उपदेश करता है, उसे भय कहाँ। सत्पुरुष डरकर सत्य को नहीं छिपाते। जान जाए तो जाए, परन्तु ईश्वर की

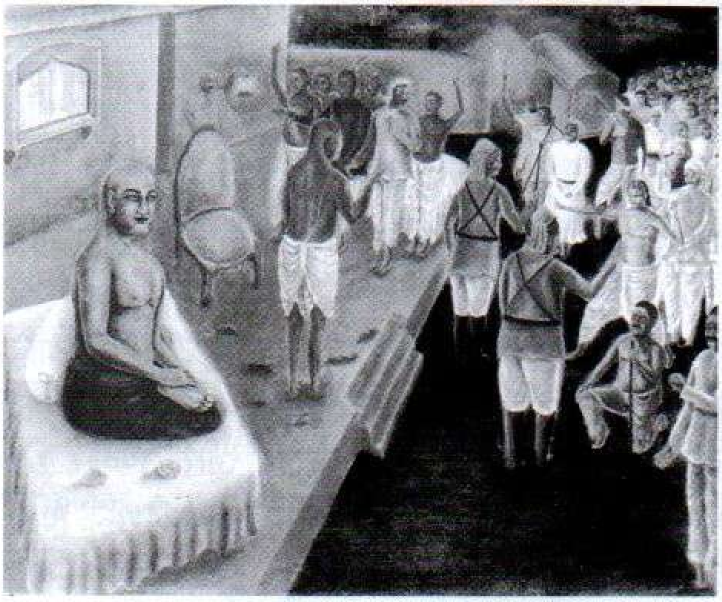

आज्ञा जो सत्य है वह न जाए। हे बलदेव! क्या चिन्ता है, एक मैं हूँ, एक ईश्वर है; एक धर्म है और कौन है।' आनन्द बाग में श्रोताओं की ६०००० की भीड़ में काशी के जाने माने गुण्डे उपस्थित थे। क्यों? उत्तर समझा जा सकता है। काशी की पण्डित मण्डली को तो भली-भाँति ज्ञात था कि उनकी पराजय सुनिश्चित है। फिर तो स्पष्ट ही था कि ऐसी स्थिति में दयानन्द के प्राण-हरण की योजना थी। शासक भी अनुकूल नहीं था। वातावरण में जो कुछ लिखा था सब कुछ पढ़ा जा सकता था, परन्तु दयानन्द के चेहरे पर एक भी शिकन नहीं थी। और फिर हुआ वही और ठीक वैसा, जैसा हमने ऊपर लिखा। **कोतवाल रघुनाथ धन्य हो तुम। तुम न होते तो उस दिन दयानन्द दिवाकर अस्त भी हो सकता था।**

उक्त सभा में विद्वान् कहे जाने वाले लोगों ने घोर मूढ़ता का प्रदर्शन किया, छल-कपट का जिस तरह प्रयोग हुआ उसका तथा निर्णायक के दायित्व को न निभा पाने वाले महाराजा ईश्वरी प्रसाद का नाम अब इतिहास के पृष्ठों में इस कुचक्र के वर्णन के साथ अंकित हो चुका है।

ऐसी घटना के पश्चात् एक साधारण व्यक्ति का विक्षुब्ध हो जाना स्वाभाविक था परन्तु दृढ ईश्वर विश्वासी दयानन्द असाधारण थे। दूसरे दिन साधू जवाहर दास यह सोच कर कि दयानन्द बहुत विकल होंगे, जब दयानन्द के डेरे पर गए तो वे रोज की भाँति प्रसन्नचित्त अपने कार्य में लगे हुए थे। इस घटना के बाद भी स्वामी जी पाँच बार काशी गए।

ऐसी पचासों घटनाएँ महर्षि दयानन्द के जीवन में आयीं पर यहाँ सब का उल्लेख नहीं किया जा सकता। कई

विद्वानों का मानना है कि जोधपुर की घटना से पूर्व स्वामी जी को १७ बार विष दिया गया। आपसे मैं कहता हूँ कि एक भी ऐसा अवसर ढूँढ़ कर दिखाएँ जब आपने दयानन्द को भयभीत होकर सत्य कथन से विरत होते देखा हो। चाहे प्रलोभन हो या जीवन-घात का संकट, दयानन्द कभी विचलित नहीं हुए। सामने वाला चाहे कितने भी उच्च पद पर क्यों न हो दयानन्द पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता था। उनके निकट तो सत्य-कथन ईश्वर का आदेश था। अतः हर हाल में मान्य था। बरेली में भरी सभा में सिंह गर्जना के साथ ऋषि ने कहा- 'लोग कहते हैं कि सत्य प्रकट न करो, कलेक्टर क्रोधित होगा, कमिश्नर अप्रसन्न होगा, गवर्नर पीड़ा देगा। अरे! चक्रवर्ती राजा भी क्यों न अप्रसन्न हो, हम तो सत्य ही कहेंगे।

आपको एक भी ऐसा अवसर नहीं मिलेगा। आखिर तो वे हर समय ईश्वर की अभिरक्षा में थे, फिर भय कैसा? तो सत्यवादी दयानन्द ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के अंत में भी उपनिषद् वाक्यों का प्रयोग कर लिखा है।

सत्यमेव जयते नानृतं सत्येन पन्था विततो देवयानः।
येनाऽऽक्रमन्त्यृषयो ह्याप्तकामा यत्र तत्सत्यस्य परमं निधानम्॥
न हि सत्यात्परो धर्मो नानृतात्पातकं परम्।
नहि सत्यात्परं ज्ञानं तस्मात्सत्यं समाचरेत्॥

वस्तुतः यही वैदिक संस्कृति के मूल तत्व हैं जिनसे महर्षि दयानन्द का जीवन अनुप्राणित था और वे विश्व के प्रत्येक मानव के अन्दर भी इन्हीं मूल्यों की स्थापना करना चाहते थे।

- अशोक आर्य
सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, उदयपुर
चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०८००५८०८४८५

□□□

दान की अपील

सत्यार्थ प्रकाश रचना स्थली नवलखा महल से NMCC के रूप में सत्यार्थ शिक्षाओं को जिस अद्भुत प्रकार से प्रसारित किया जा रहा है और सहस्रों लोग आकर्षित हो इसका लाभ ले रहे हैं जिस कारण से यह स्थल अब विख्यात होता जा रहा है। आपसे प्रार्थना है कि इस यज्ञ में अपनी छोटी-बड़ी आहुति अवश्य देने की कृपा करें। इस हेतु साथ में दिए यूपीआई कोड का भी आप इस्तेमाल कर सकते हैं। बस एक अनुरोध है कि अगर आप अर्थ सहयोग प्रदान करें तो चलभाष 9314235101, 7976271159 अथवा 9314535379 पर सूचित अवश्य करें।

G Pay

gpay-11194313460@okbizaxis

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास

G Pay PhonePe Paytm

BHIM UPI

पत्रिका से सम्बन्धित किसी प्रकार की जानकारी/शिकायत के लिये निम्न चलभाष पर सम्पर्क करें।
09314535379

पाठकों के पास 'सत्यार्थ सौरभ' डाक विभाग की अव्यवस्था के कारण अनेक बार समय पर नहीं पहुँच पाती है। पाठक न्यास को ही दोषी मानते हैं, जिसे अनुचित भी नहीं कहा जा सकता। परन्तु वास्तविकता है कि यहाँ से प्रत्येक माह की 7 तारीख को पत्रिका प्रेषित कर दी जाती है। पश्चात् सब कुछ डाक विभाग की कृपा पर निर्भर करता है। फिर भी आपसे निवेदन है कि प्रत्येक माह की 20 तारीख तक भी पत्रिका न मिलने पर कृपया इसी चलभाष पर सम्पर्क करें।

-सम्पादक

यहाँ जिन देवों को जगाने सुलाने की बात हो रही है वह न तो जड़ देवों की बात न ईश्वर की, क्योंकि जड़ देव ईश्वर के आधीन हैं हमारे नहीं, और ईश्वर सोता और जागता नहीं क्योंकि अजर, अमर तथा शरीरों के संयोग वियोग से रहित है उसको आवश्यकता नहीं शरीर धारण की, इसलिए स्वभाव में नहीं।

यहाँ बात हो रही घर के पुरुष देवों की।

आइए अब 'देव शयनी' को जानेंगे- गृह देवताओं का वह शयन काल, अर्थात् गृह देवों के इन्द्रियों द्वारा किए जाने वाले **कृषि, व्यापार आदि कर्मों के लिये अनुपयुक्त काल**। वह कृषि, व्यापार आदि कार्यों का निष्क्रिय समय अर्थात् जब कार्य करने में प्रकृति का असहयोग हो, ऐसा वह काल चातुर्मास्य- वर्षाकाल होता है **वर्षाकाल ही गृह**

कृषि, व्यापार आदि कार्यों को करने के लिए उपयुक्त सक्रिय काल है, प्रकृति का पूर्ण सहयोग और वर्षाकाल की समाप्ति।

इसलिए लोग एक अभिनय जनक पूजा का उपक्रम करते हैं जो ईश्वर को धन्यवाद स्वरूप होता है। जिसमें नवान्न को एक पात्र में रखा जाता है और जगाने का गायन किया जाता है। **यदि यही वेद मंत्र 'यो जागारः' जैसे वेद मंत्रों की व्याख्या जन सामान्य को बताने यज्ञ द्वारा उपक्रम हो तो कितना अच्छा हो जिससे वैदिक संस्कृति की रक्षा भी हो और सही सन्देश भी।**

अब कुछ एकादशी के बारे में–

'एकादशी क्या?'

एकादशी तिथि को कहते हैं।

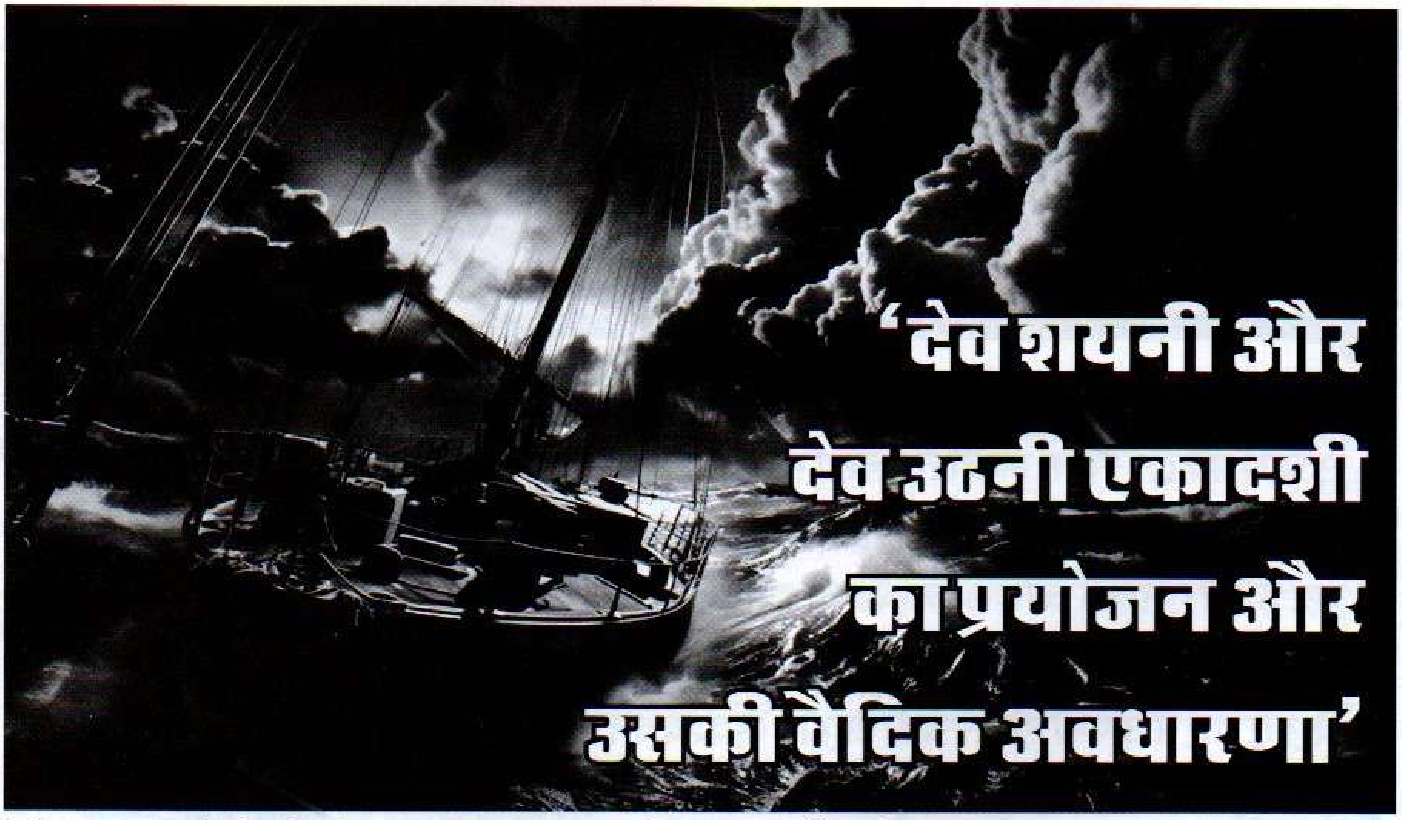

देवों का बाह्यकार्य की दृष्टि से शयन काल कहा जाता है, कि वर्षाकाल आरम्भ हो गया।

अब 'देव उठनी अर्थात् देव प्रबोधिनी एकादशी' क्या?

गृह देवों का धन कमाने बाहर जाने का वह उपयुक्त समय- जाग्रत काल कहा जाता है। वही देव उठनी के नाम से पुकारा जाता है। मतलब देव पुरुष अपने कार्यों के लिए तैयार हों। गृह देव जब बाहर जा व्यापार आदि कार्य करने प्रवृत्त होते हैं।

देवताओं के उठने अर्थात् जागने के समय से तात्पर्य

एकादशी व्रत?

एकादशी व्रत वह संकल्प आचरण है जो ११ इन्द्रियों को सफल करने के लिए किया जाता है।

'एकादशी ही क्यों ? द्वादशी क्यों नहीं?'

क्योंकि हमारी मन सहित ५ ज्ञानेन्द्रियाँ और ५ कर्मेंद्रियाँ होती हैं। उन्हीं से सब कार्य सिद्ध होते हैं वे ही हमारी साधन हैं। अतः एकादशी ही अपेक्षित है।

'एकादशी व्रत से लाभ?' ११ इन्द्रियों को विजेता बनाने सूचक, प्रतीकात्मक एकादश तिथि में अपनाए जा रहे

विशिष्ट साधनों से साध्य परमेश्वर की सन्निधि में रह साफल्य प्राप्त करना है।

जिससे ११ इन्द्रियों को नियंत्रित करने की प्रेरणा मिलती है। जिससे लोग तिथि के नाम से अपनी इन्द्रियों पर बोध कर कर्तव्य का सम्यक् निर्वहन कर सकें।

वस्तुतः मनुष्य जीवन का साफल्य तभी है जब मनुष्य मानव चोले में आकर अपनी मनुष्यता को बनाए रखे, मनुष्यता का पतन न होने दे और मनुष्यत्व को धारण करते हुए देवत्व की ओर बढ़े, इसके लिए एकादश इन्द्रियों पर नियंत्रण रख इन्द्रियजितु बने, इन्द्रियजित बनने के लिए व्रत संकल्प ले कि मैं आज से अपनी इन्द्रियों पर नियंत्रण करूँगा, सात्विक भोजन करूँगा, नियमित दिनचर्य्या का पालन करूँगा, सदैव धर्म का ही पालन करूँगा, वैदिक सिद्धान्तों के प्रति दृढ़ रहूँगा, ईश्वर का सच्चा साधक बनूँगा, कभी भी विचलित, भयभीत, भ्रमित नहीं होऊँगा। रसना पर पूरा नियंत्रण रखूँगा। **किसी भी इन्द्रिय से कभी अधर्म, अन्याय, पाप नहीं करुँगा। सदैव विमल वेद के समीप रहूँगा।**

देखा जाए तो निराहार तथा फलाहार से शरीर के पाचन कोष्ठ की शुद्धि तथा रसनेन्द्रिय पर नियंत्रण करने की कुशलता प्राप्त होती है। रसनेन्द्रिय पर जिस मनुष्य का नियंत्रण हो जाता है वह फिर अन्य इन्द्रियों को भी नियंत्रित सरलता से कर पाता है।

किन्तु वर्तमान में ज्यादातर व्रत नियंत्रण के कम, स्वाद निमंत्रण के अधिक देखे जाते हैं। कहीं न कहीं हम भौतिकता की चकाचौंध में सत्य को भूल गए हैं, मिथ्या बाह्य आडम्बरों के चलते पतन को प्राप्त हो रहे हैं। यजुर्वेद का ४०वाँ मण्डल कहता है-

हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितम् मुखम्

अब देवताओं के बारे में भी संक्षेप से जानिये–

'देवता कौन?'

जिनमें देवत्व के गुण समाहित होते हैं, जो इन्द्रियजित होते हैं वे ही चेतन पुरुष देव कहलाते हैं। ईश्वर ने यह देव बनने की ताकत हम सभी मानवों को भेंट की हुई है।

४ मास तक घरों के देवता पुरुष वर्षाकाल की वजह से घरों से बाहर धन कमाने नहीं निकल सके, धर्म भी धन से हो पाता है। वर्षा काल के पश्चात् अब वे पुनः अपने काम पर जाने के लिए तैयार हो चुके हैं। क्योंकि प्रकृति ने अब उनके लिए स्वतः ऋतु परिवर्तन द्वारा अपना द्वार खोल दिया है, विजयादशमी पर्व मना अपने साहस से क्षत्रियों ने असुरों से, दुर्जनों से, दुष्टों से धरा को स्वच्छ कर रास्ते के बाधक तत्वों, रोड़ों को भी हटा दिया है।

सारे रास्ते कामकाजियों, व्यापारियों के आलिंगन के लिए लिए तैयार है।

हमारी सनातन संस्कृति इतनी मजबूत है कि इस पर कितनी भी अज्ञान की कालिख आजाए, पड़ जाए, वा फेंकी जाए, यह वापिस अपने मूल को खोज ही लेती है। समस्त व्रतों पर्वों उत्सवों को मनाने के पीछे उद्देश्य भी यथार्थ अर्थात् वास्तविकता से परिचय कराना, प्रेरणा देकर घर परिवार समाज को जाग्रत करना, निराशा, अंधकार से आशा, प्रयास, प्रकाश, प्रसन्नता पूर्णता की ओर बढ़ाना तथा ऊँच-नीच, भेदभाव की मैली चादर से निकाल सभी वर्णों को योग्यतानुसार समानता, न्याय, शुभता का पाठ पढ़ाना।

व्यक्तिगत उन्नति हो वा पारिवारिक समाजिक हो वा राष्ट्रीय, सभी उन्नतियाँ व्रत संकल्पों पर टिकी हैं।

असुरों का संहार हो वा देवों की सुरक्षा।
ईश्वर की खोज हो वा व्यक्तिगत मौज हो,
बिना संकल्प लिए कोई कार्य सिद्ध नहीं होते।

अब प्रश्न उठता है कि उद्यापन क्या, क्यों और कब?

'उद्यापन कब?'

हम देखते हैं जब व्यक्ति वृद्ध हो जाता है शारीरिक अस्वस्थता और मानसिक परिपक्वता होने लगती है तब वह निराहार और फलाहार से औषधियों पर आ जाता है अर्थात् जब व्यक्ति गृहस्थ से वानप्रस्थ और फिर संन्यास की ओर बढ़ता है, तत्पश्चात् कार्यों से निवृत्ति का समय और तन की असमर्थता तथा ज्ञान परिपक्वता आ ही जाती है व्रत भी पूर्णता की ओर होता है।

इसलिए यह उद्यापन बढ़ी हुई आयु में ही करते हुए देखा जाता है। आओ हम सब सच्चे व्रती बनें, परमेश्वर से प्रार्थना करें- **अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तच्छकेयम् तन्मे राध्यताम्।**
इदमहमनृतात् सत्यमुपैमि।।

तथा पुरुषार्थ से इन्द्रजीत हो हम सभी अपना परम प्रयोजन सिद्ध करें।

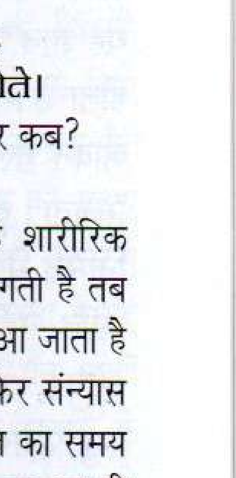

- आचार्या विमलेश बंसल आर्या
३२९, सन्त नगर, ईस्ट ऑफ कैलाश, नई दिल्ली

❑❑❑

ईश्वर ने वेद-ज्ञान क्यों दिया? इसके कारण

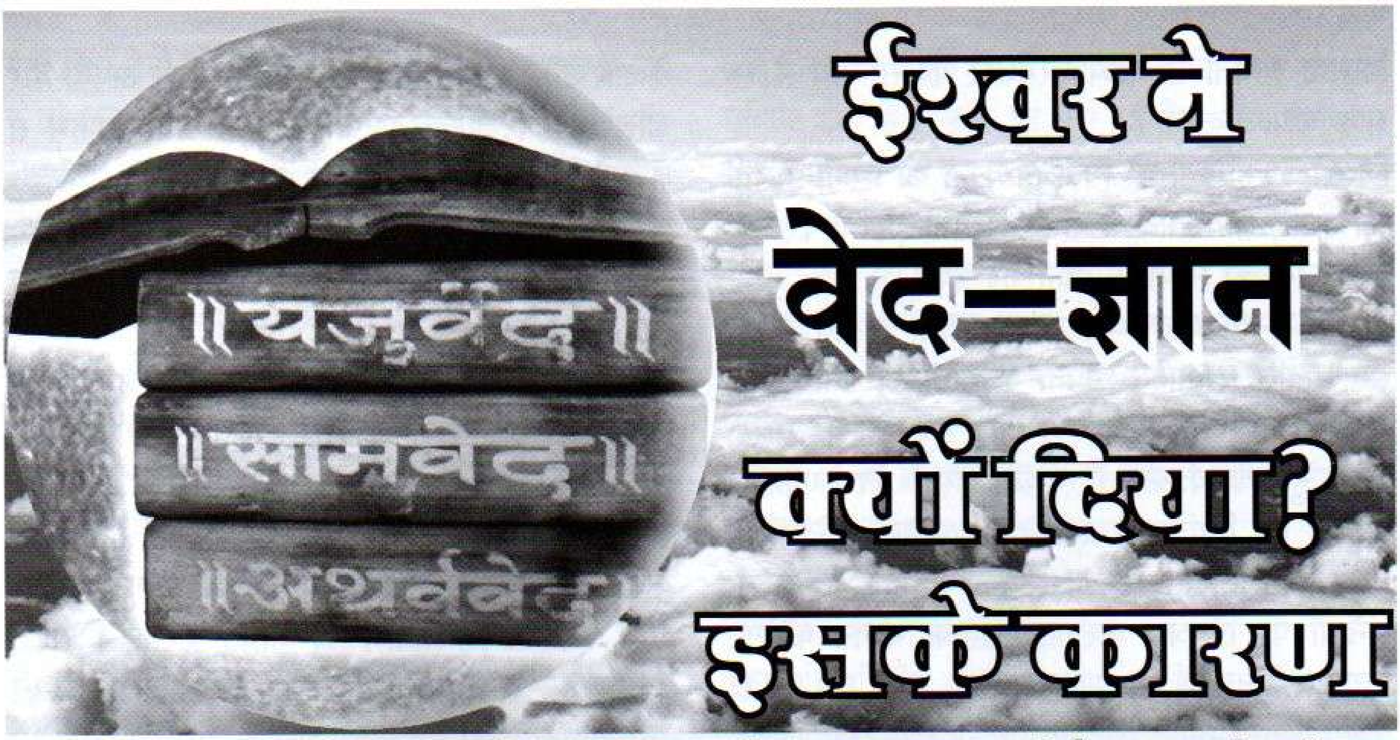

ईश्वर ने वेद-ज्ञान क्यों दिया, इसके मुख्य चार कारण हैं। वे इस भाँति हैं।

१. ज्ञान दो प्रकार का होता है– पहला स्वाभाविक ज्ञान, दूसरा नैमित्तिक ज्ञान। स्वाभाविक ज्ञान खाना-पीना, सोना-जागना, हँसना-रोना तथा बच्चे पैदा करना है। यह ज्ञान पशु-पक्षियों में अधिक और मनुष्यों में कम होता है। कारण पशु-पक्षी इसी ज्ञान से अपना पूरा जीवन चलाते हैं। इसमें किये हुये कर्मों का फल नहीं मिलता। दूसरा नैमित्तिक ज्ञान वह होता है जो किसी निमित्त से सीखा जाता है। सिखाए बगैर इस ज्ञान की प्राप्ति नहीं हो सकती। यह ज्ञान मनुष्यों में बहुत अधिक और पशु-पक्षियों में बहुत कम होता है। पशु-पक्षियों का बच्चा पैदा होते ही पानी में तैरता है, जैसे कुत्ते के बच्चे को आप पानी में डाल दीजिए, वह तैर कर बाहर निकल जावेगा, कारण यह पशु-पक्षियों के लिये स्वाभाविक ज्ञान है परन्तु मनुष्य के बच्चे को यदि आप पानी में डाल देंगे तो वह डूब जायेगा। यदि आप उसको तैरना सिखा दोगे तो वह तैरकर पार चला जाएगा कारण **तैरना मनुष्य लिए नैमित्तिक ज्ञान है**। इस ज्ञान में किये हुये कर्मों का ईश्वर की न्याय व्यवस्था से अच्छा या बुरा फल मिलता है। मनुष्य भी खाता-पीता, उठता-बैठता, सोता-जागता, आँख खोलना-बन्द करना, बच्चे पैदा करना, ये सभी काम उसके स्वाभाविक काम हैं। अब प्रश्न उठता है कि जब ईश्वर ने प्रकृति से जीवों के लिए सृष्टि के आदि में तिब्बत के पठार पर कृत्रिम गर्भाशय बनाकर अनेक नौजवान लड़के-लड़कियों को उत्पन्न किया उस समय उनके माता-पिता, गुरु आदि कोई नहीं थे जिनसे वे युवा लड़के-लड़कियाँ चलना, फिरना, बोलना आदि सीख सकें। उस समय उनका ईश्वर ही माता-पिता तथा गुरु था, इसलिए ईश्वर ने उनका चलना-फिरना, बोलना तथा अपने जीवन को कैसे उन्नत व समृद्धिशाली बनाकर जीवन को सुखी व श्रेष्ठ बनाते हुए कैसे धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष को प्राप्त कर सकें जो मनुष्य योनि में आने का जीव का मुख्य उद्देश्य है, इसलिए ईश्वर सृष्टि के आरम्भ में

चार ऋषियों द्वारा जिनके नाम अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा थे, उनके हृदय में चार वेद जिनके नाम ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद व अथर्ववेद हैं प्रकाशित करके, उनके मुख से उच्चारित करवाया। **ज्ञान ईश्वर प्रदत्त था और उच्चारित उन ऋषियों ने किया।** ऋषियों के मुख से सबसे पहले ब्रह्मा ऋषि ने सुना। ब्रह्मा की बुद्धि इतनी प्रखर थी कि उन्होंने चारों वेदों को कण्ठस्थ कर लिया और फिर उसने बाकी लोगों को सुनाया और फिर बाकी लोगों ने ब्रह्मा से सुनकर माता-पिता ने अपने बेटे-पौत्रों को तथा गुरु ने अपने शिष्यों को सुनाया। इस प्रकार से बाप-बेटे को और गुरु-शिष्य को सुनाने की परम्परा चालू हो गई जो अब तक चलती आ रही है। महाभारत से पूर्व तक तो वेद-ज्ञान का प्रचार-प्रसार बराबर चलता रहा परन्तु महाभारत के भीषण युद्ध में अधिकतर योद्धा, विद्वान्, आचार्य आदि या तो मारे गए या मर गए और महाभारत के बाद मूर्ख, अविद्वान् व स्वार्थी लोगों ने अपने-अपने ढंग से अनेक मत-मतान्तर चला दिए जिससे वेद ज्ञान प्रायः लुप्त हो गया। वेद ज्ञान द्वारा ईश्वर ने मनुष्य को अपने जीवन में क्या काम करना चाहिए और क्या काम नहीं करना चाहिए सब बताया है। वेदों के अनुसार चलने से मनुष्य अपने जीवन को उन्नत, समृद्धिशाली व सुखी तो बनाता ही है साथ ही धर्म, अर्थ, काम को कर्त्तव्य भाव से करते हुए ध्यान, धारणा व समाधि तक पहुँच जाता है और समाधि में आनन्द को अपने जीवन में ही प्राप्त करता है और मृत्यु के बाद मोक्ष की स्थिति में ईश्वर के सान्निध्य में रहते हुए परम आनन्द को प्राप्त करता है। मोक्ष की अवधि ३१ नील १० खरब ४० अरब है तब तक मोक्ष में रहते हुए परम आनन्द को प्राप्त करता रहता है। जीव अधिक अच्छे शुभ कर्म करने से मनुष्य योनि को प्राप्त करता है और इसी योनि में जीवनभर निष्काम कर्म करते हुए यदि परोपकार के कार्य करता रहता है वह व्यक्ति मरने के बाद मोक्ष को प्राप्त करता है। जो जीव का अन्तिम लक्ष्य है। इसीलिए मनुष्य योनि को सबसे श्रेष्ठ व उत्तम योनि माना है और मोक्ष पाने का द्वार भी मनुष्य योनि ही है। अन्य योनियाँ नहीं।

२. वेद ज्ञान मनुष्य मात्र का विधान है– जैसे किसी देश व राष्ट्र का विधान होता है वह देश व राष्ट्र उसी विधान के अनुसार चलता है तभी उस देश व राष्ट्र में सुख व शान्ति बनी रहती है। देश को चलाने के लिए जैसे विधान जरूरी है वैसे ही सृष्टि को चलाने के लिए वेद ज्ञान जरूरी है जिसको ईश्वर ने सृष्टि के आरम्भ में चार ऋषियों के हृदय में प्रकाश कर दिया जिसके अनुसार चलने से मनुष्य सुख व शान्ति को स्वयं भी प्राप्त करता है और अन्यों को भी सुखी बनाता है।

३. बुद्धि के लिए ईश्वर ने वेद ज्ञान दिया– जिस प्रकार ईश्वर ने मनुष्य की पाँच ज्ञानेन्द्रियों के लिए पाँच तत्व दिए जिनके सहारे वह अपना जीवन चलाता है। जैसे आँख के लिए अग्नि दी जिसके प्रकाश से आँखें रूप को देखती हैं। कानों के लिए आकाश बनाया जिसके सहारे वह शब्द सुनता है। नाक के लिए पृथ्वी बनाई जिससे वह गन्ध को ग्रहण करता है। जिह्वा के लिए पानी बनाया जिससे वह रस का अनुभव करता है और त्वचा के लिए हवा बनाई जिससे वह स्पर्श का अनुभव करता है। यह पाँचों तत्व ईश्वर ने सृष्टि बनाने के साथ ही मनुष्यों के लिए बना दिए थे। **इसी प्रकार बुद्धि के लिए ईश्वर ने सृष्टि के आरम्भ में ही वेद ज्ञान दे दिया जिसके अनुसार चलने से वह अपने जीवन को उन्नत व सुखी बना सके।** यदि ईश्वर वेद ज्ञान न देता तो बुद्धि अपना कार्य नहीं कर पाती और उसका बनना व्यर्थ हो जाता। वेदों को पढ़कर मनुष्य बुद्धि से चिन्तन व मनन करता है और अपने जीवन को उन्नत व सुखी बनाता है। यह बात भी सत्य है यदि ईश्वर ने मनुष्य की उत्पत्ति के आरम्भ में वेद ज्ञान न दिया होता तो

मनुष्य पशुवत् ही रह जाता।

४. किसी मशीन को बनाने के बाद वैज्ञानिक User Manual बनाता है– एक वैज्ञानिक यदि कोई मशीन बनाता है तो उस मशीन का कैसे प्रयोग किया जावे, खराब होने पर कैसे ठीक किया जावे, यह सब बातें वैज्ञानिक एक लघु-पत्रिका में लिखकर अपने खरीददार को देता है जिसके आधार पर खरीददार इस मशीन का प्रयोग करता है और मशीन खराब हो जाने पर उसी लघु पुस्तिका के आधार पर उसे ठीक भी करता है। इसी प्रकार ईश्वर ने भी मनुष्य उत्पत्ति के साथ-साथ वेद ज्ञान मनुष्यों के लिए दिया जिसको पढ़कर तथा उसके अनुसार चलकर

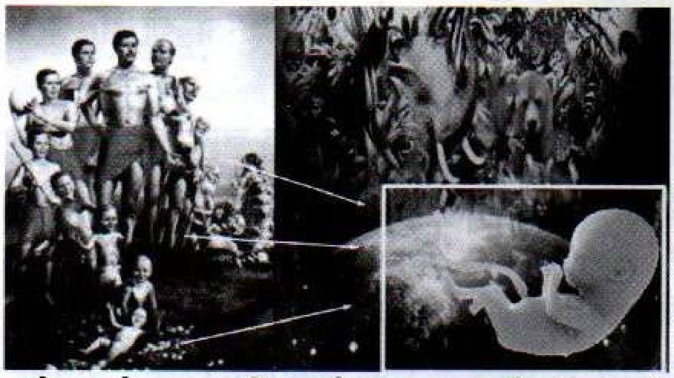

धर्म, अर्थ, काम को धर्मानुसार व कर्तव्य भाव से करते हुए मोक्ष को प्राप्त करता है जो मनुष्य का अन्तिम लक्ष्य है। जिसको पाने के लिए जीव मनुष्य योनि में आता है।

यहाँ समझने की बात यह है कि मनुष्य देह से जब आत्मा या जीव जाता है तो उसकी तीन गतियाँ होती हैं। यदि उस मनुष्य ने अपने जीवन में आधे से अधिक अच्छे व शुभकर्म किए हैं तो उसको एक साधारण मनुष्य का जीवन मिलता है। आधे से अधिक अच्छे व शुभ कर्म किए हैं तो मनुष्य योनि में उत्तरोत्तर अच्छे सुखदायक परिवार में उत्पन्न होगा यानि एक गरीब परिवार में न होकर किसी साहूकार, राजा या कोई बड़े मंत्री के घर पैदा होगा और जीवन में बुरे काम अधिक किए हैं तो उसी के हिसाब से पशु-पक्षी या कीट-पतंग की योनि में जन्म लेगा और जिस व्यक्ति ने जीवन भर अच्छे सत्कर्म या परोपकारी काम किए हैं उसे मरने के बाद मोक्ष प्राप्त होगा। बस यह तीन गति ही मनुष्य का चोला छोड़ने के बाद होती हैं। वस्तुतः इसका सही ज्ञान तो ईश्वर को ही है जो जीव के गुण, कर्म, स्वभाव के अनुसार उसको अगली योनि देता है।

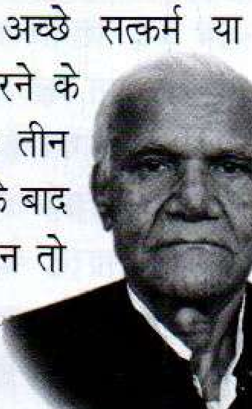

- खुशहाल चन्द आर्य
द्वारा गोविन्द राम आर्य एण्ड सन्स,
१८० महात्मा गाँधी रोड, दो तल्ला, कोलकात्ता- ७००००७

❑❑❑

विश्व भर से आने वाले पर्यटकों के नवलखा महल, उदयपुर के बारे में विचार

आज इस देवस्थान पर आकर बचपन की यादें ताजा हो गईं। महर्षि दयानन्द के जीवन से अभिभूत कर देने वाले कई संस्कार और घटनाओं को आत्मसात किया। आज यह अनुभव हुआ कि उदयपुर भ्रमण इस स्थान के बिना अधूरा है। मनुष्य जीवन केवल मनोरंजन वह भौतिक सुखों के लिए नहीं वरन् अपने परिवार, समाज एवं राष्ट्र के लिए कुछ विशेष करने का है। **जीवन दर्शन का एक अद्‌भुत अनुभव व ज्ञान का सिंचन इस स्थान से कलकल बह रहा है।** जिससे हर व्यक्ति एवं पर्यटक को लाभ लेना ही चाहिए। धन्यवाद

- महेश आमेटा एवं विजयलक्ष्मी आमेटा, उदयपुर

आज मैंने नवलखा महल के द्वारा चलाए जा रहे सभी प्रकल्पों को देखा। जो हमारे वैदिक संस्कृति का परिचय ही नहीं अपितु अनुकरण करने के लिए आकर्षित करते हैं। संस्कार वीथिक को देखा जिसमें १६ संस्कारों को बड़े ही रोचक एवं भारत की सांस्कृतिक एकता को प्रदर्शित करते हुए दिखाया गया है। यहाँ दर्शाया गया है कि सम्पूर्ण भारत के हर राज्य में संस्कारों का प्रचलन था अतः मनुष्य को १६ संस्कार करने चाहिए। आर्ट गैलरी के दर्शन किए जिसमें वेदों के ज्ञान को बहुत अच्छे एवं आकर्षक चित्रों के माध्यम से सभी दर्शकों को समझाया जाता है। मुझे लगता है कि सम्पूर्ण भारत में एकमात्र यह ऐसा पर्यटन स्थल है जो मनुष्यों को (दर्शकों) को हमारे वैदिक संस्कृति एवं आर्य समाज के सिद्धान्तों का परिचय कराता है।

- डॉक्टर कुलदीप कुमार; सह आचार्य, पी.जी.डी.ए.वी. महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

क्रान्तिकारियों और देश की आजादी में योगदान व बलिदान देने वाले अन्य महापुरुषों के बारे में जानकारी संक्षिप्त व सरल रूप में दी गई, जो कि रोचक एवं ज्ञानदायक थी। १६ संस्कारों की जानकारी, महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवन परिचय एवं अन्य महापुरुषों की झलकियाँ यहां देखने को मिलीं, जो आकर्षक एवं ज्ञानवर्धक थी।

- दर्शील शर्मा

वसन्त पञ्चमी पर विशेष
(बाल हकीकत बलिदान दिवस)

धर्म की खातिर बाल हकीकत सर अपना कटवावे, मेरा वैदिक धर्म न जावे

वीर हकीकत राय का जन्म १७२८ में सियालकोट में लाला बागमल पूरी के यहाँ हुआ। इनकी माता का नाम कोरा था। लाला बागमल सियालकोट के तब के प्रसिद्ध सम्पन्न हिन्दू व्यापारी थे। वीर हकीकत राय उनकी एकमात्र सन्तान थे। उस समय देश में बाल विवाह प्रथा प्रचलित थी, इसी कारण से वीर हकीकत राय का विवाह बटाला निवासी किशन सिंह की बेटी लक्ष्मी देवी से बारह वर्ष की आयु में कर दिया गया था। बागमल पूरी ने अपने पुत्र को फारसी, जो कि उस समय की अधिकारिक भाषा थी, सीखने के लिये मौलवी के पास भेजा।

मुस्लिम विद्यार्थी कुशाग्र बुद्धि हकीकत से ईर्ष्या करते थे। एक बार हकीकत राय का अपने मुसलमान सहपाठियों के साथ झगड़ा हो गया। उन्होंने माता दुर्गा के प्रति अपशब्द कहे, जिसका हकीकत ने विरोध करते हुए कहा, "क्या यह आपको अच्छा लगेगा यदि यही शब्द मैं आपकी बीबी फातिमा (मोहम्मद की पुत्री) के सम्बन्ध में कहूँ?

"इस पर मुस्लिम बच्चों ने शोर मचा दिया कि इसने बीबी फातिमा को गालियाँ निकाल कर इस्लाम और मोहम्मद का अपमान किया है। साथ ही उन्होंने हकीकत को मारना-पीटना शुरू कर दिया। मदरसे के मौलवी ने भी मुस्लिम बच्चों का ही पक्ष लिया। शीघ्र ही यह बात सारे स्यालकोट में फैल गई। लोगों ने हकीकत को पकड़ कर मारते-पीटते स्थानीय हाकिम आदिल बेग के समक्ष पेश किया। वो समझ गए कि यह बच्चों का झगड़ा है, मगर मुस्लिम लोग उसे मृत्यु-दण्ड की माँग करने लगे। हकीकत राय के माता-पिता ने भी दया की याचना की। तब आदिल बेग ने कहा, **"मैं मजबूर हूँ। परन्तु यदि हकीकत इस्लाम कबूल कर ले तो इसकी जान बख्श दी जायेगी।" किन्तु उस १४ वर्ष के बालक हकीकत राय ने धर्म परिवर्तन से इंकार कर दिया।** बागमल ने रिश्वत देकर अपने बेटे का मुकदमा लाहौर भेजने की फरियाद की, जो मंजूर कर ली गई।

दो दिनों की पैदल यात्रा के बाद हकीकत राय को बन्दी बनाकर लानेवाले सैनिक लाहौर पहुँचे। अगले दिन उसे पंजाब के तत्कालिक सूबेदार जकरिया खान के समक्ष पेश किया गया। यहाँ भी हकीकत के स्यालकोट से आये मुस्लिम सहपाठियों, मुल्लाओं और काजियों ने हकीकत राय को मौत की सजा देने की माँग की। उन्हें लाहौर के मुस्लिम उलेमाओं का भी समर्थन मिल गया। नवाब जकरिया खान समझ तो गया कि यह बच्चों का झगड़ा है, मगर मुस्लिम

उलेमा हकीकत की मृत्यु या मुसलमान बनने से कम पर तैयार न थे।

परन्तु हकीकत राय ने अपना धर्म छोड़ने से मना कर दिया। उसने पूछा, "क्या यदि मैं मुसलमान बन जाऊँ तो मुझे मौत नही आएगी? क्या मुसलमानों को मौत नही आती?" तो उलमाओं ने कहा, "मौत तो सभी को आती है।" तब हकीकत राय ने कहा, "तो फिर मै अपना धर्म क्यों छोड़ू। इस प्रकार सारा दिन लाहौर दरबार में शास्त्रार्थ होता रहा, मगर हकीकत राय इस्लाम कबूलने को तैयार नहीं हुआ। जैसे-जैसे हकीकत की विद्वता, साहस और बुद्धिमता प्रगट होती रही, वैसे-वैसे मुसलमानों में उसे दीन का बनाने का उत्साह भी बढ़ता जा रहा था। परन्तु कोई स्वार्थ, कोई लालच और न ही कोई भय उस १४ वर्ष के बालक हकीकत को डिगाने में सफल रहा।

आखिरकार हकीकत राय के माता-पिता ने एक रात का समय माँगा, जिससे वो हकीकत राय को समझा सकें। उन्हें समय दे दिया गया। रात को हकीकत राय के माता-पिता उसे जेल में मिलने गए। उन्होंने भी हकीकत राय को मुसलमान बन जाने के लिये तरह तरह से समझाया। माँ ने अपने बाल नोंचे, रोई, दूध का वास्ता दिया। मगर हकीकत ने कहा, "माँ! यह तुम क्या कर रही हो। तुम्हारी ही दी शिक्षा ने तो मुझे ये सब सहन करने की शक्ति दी है। मैं कैसे तेरी दी शिक्षाओं का अपमान करूँ। **आप ही ने सिखाया था कि धर्म से बढ़ के इस संसार में कुछ भी नही है। आत्मा अमर है।"**

अगले दिन वीर बालक हकीकत राय को दोबारा लाहौर के सूबेदार के समक्ष पेश किया गया। सभी को विश्वास था कि हकीकत आज अवश्य इस्लाम कबूल कर लेगा। उससे आखरी बार पूछा गया कि क्या वो मुसलमान बनने को तैयार है? परन्तु हकीकत ने तुरन्त इससे इंकार कर दिया। जकारिया खान नवाब ने हकीकत राय को काजियों को सौंप दिया कि उनका निर्णय ही आगे मान्य होगा।

लाहौर के मुस्लिम उलेमाओं ने हकीकत राय के लिये मौत की सजा का फतवा दे डाला।

१८४६ में गणेशदास रचित पुस्तक, 'चार-बागे पंजाब' के मुताबिक इसके लिए लाहौर में बाकायदा मुनादी करवाई गई कि अगले दिन हकीकत नाम के शैतान को (संग-सार) अर्थात् पत्थरों से मारा जायेगा और जो-जो मुसलमान इस मौके पर सबाब (पुण्य) कमाना चाहे आ जाये।

अगले दिन बसन्त पंचमी का दिन था, जो तब भी और आज भी लाहौर में भी धूमधाम से मनाया जाता है। वीर हकीकत राय को लाहौर की कोतवाली से निकाल कर उसी के सामने गड्ढा खोद कर कमर तक उसमें गाड़ दिया गया। लाहौर के मुसलमान शैतान को पत्थर मारने का पुण्य कमाने हेतु उसे चारों तरफ से घेर कर खड़े हो गए। हकीकत राय से अन्तिम बार मुसलमान बनने के बारे में पूछा गया। **हकीकत ने अपना निर्णय दोहरा दिया कि मुझे मरना कबूल है पर इस्लाम नही।** इससे लाहौर के काजियों ने हकीकत राय को संग-सार करने का आदेश सुना दिया। आदेश मिलते ही उस १४ वर्ष के बालक पर हर तरफ से पत्थरों की बारिश होने लगी। हजारों लोग "अल्लाहू-अकबर, अल्लाहू -अकबर" चिल्लाते

हुए उस बालक पर पत्थर बरसा रहे थे, जबकि हकीकत 'राम-राम' का जाप कर रहा था। शीघ्र ही उसका सारा शरीर पत्थरों की मार से लहूलुहान हो गया और वो बेहोश हो गया। तब पास खड़े जल्लाद ने अपनी तलवार से हकीकत राय का सिर काट दिया। रक्त की धारायें बह निकली और **वीर हकीकत राय १७४२ में बसन्त पंचमी के दिन अपने धर्म पर बलिदान हो गया।**

{कवि ने लिखा **"धर्म की खातिर बाल हकीकत सर अपना कटवावे, मेरा वैदिक धर्म न जावे"**}
दोपहर बाद हिन्दुओं को हकीकत राय के शव को वैदिक रीति से संस्कार की अनुमति मिल गई। उसकी शव यात्रा में सारे लाहौर के हिन्दू आ जुटे। सारे रास्ते उसके शव पर फूलों की वर्षा होती रही। इतिहास की पुस्तकों में दर्ज है कि लाहौर में ऐसा कोई फूल नही बचा था जो हिन्दुओं ने खरीद कर उस धर्म-वीर के शव पर न चढ़ाया हो। कहते हैं कि किसी माली की टोकरी में एक ही फूलों का हार बचा था जो वो स्वयं चढ़ाना चाहता था, मगर भीड़ में से एक औरत अपने कान का गहना नोच कर उसकी टोकरी में डाल के हार झपट कर ले गई। **१ पाई में बिकने वाला वो हार उस दिन १५ रुपये में बिका।** यह उस आभूषण का मूल्य था। हकीकत राय का अन्तिम संस्कार रावी नदी के तट पर कर दिया गया। उस समय हकीकत राय की पत्नी लक्ष्मी देवी अपने मायके बटाला (अमृतसर से ४५ किलोमीटर दूर) में थीं। हकीकत राय के बलिदान के पश्चात् उसने अपने पति की याद में कुँआ खुदवाया और अपना समस्त जीवन इसी कुएँ पर लोगों को जल पिलाते हुये गुजार दिया। बटाला में लक्ष्मी देवी की समाधि और कुँआ आज भी मौजूद है। यहाँ हर वर्ष बसन्त पंचमी को मेला लगता है और दोनों के बलिदान को नमन किया जाता है।

हकीकत राय के गृहनगर स्यालकोट में उसके घर में भी उनकी याद में समाधि बनाई गई, वो भी १९४७ में नष्ट कर दी गई।

वीर हकीकत राय ने भले ही लम्बी आयु न भोगी। छोटी आयु में ही उनका बलिदान हो गया, परन्तु उनका बलिदानी रक्त आज तक भी प्रतिवर्ष बसन्त के पवित्र पर्व पर हिन्दू जाति में अमरत्व की भावना का संचार कर रहा है और युगों-युगों तक करता रहेगा। बसन्त पंचमी के शुभ अवसर पर इस धर्म वीर अमर बलिदानी वीर हकीकत राय और उनकी पत्नी श्रीमती लक्ष्मी देवी को उनके बलिदान दिवस पर शत-शत नमन करते हैं। हम सभी का यह परम कर्तव्य है कि हम बाल हकीकत के जीवन चरित्र को अधिक से अधिक लोगों तक पहुँचाएँ, जिससे हम अभय होकर आगे बढ़ें। जीवन भले ही छोटा हो, परन्तु हकीकत के जीवन सा यशस्वी हो।

- सोहन लाल पाठक
पंजाब

□□□

आपकी लोकप्रिय पत्रिका सत्यार्थ सौरभ को सम्बल प्रदान करने हेतु **श्री रामजीवन मिश्र, जयपुर** ने संरक्षक सदस्यता (₹11000) ग्रहण की है। अतः अनेकशः धन्यवाद।

आपकी लोकप्रिय पत्रिका सत्यार्थ सौरभ को सम्बल प्रदान करने हेतु श्रीमती संचिता जैन, उदयपुर ने संरक्षक सदस्यता (11000) ग्रहण की है।
अतः अनेकशः धन्यवाद।

नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र, उदयपुर में निःशुल्क गोल्फ कार्ट सेवा का प्रारम्भ

जैसाकि विदित है कि नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र, उदयपुर के प्रसिद्ध गुलाबबाग के अन्दर स्थित है। गुलाबबाग का जो मुख्य द्वार है जिसको सज्जन निवास द्वार या शेर वाला फाटक भी बोलते हैं उसके अन्दर दो पहिए अथवा चार पहिए वाहनों का प्रवेश निषिद्ध है। अतः वहाँ से नवलखा महल तक कुछ दूर लगभग ७०० मीटर पैदल चलकर जाना पड़ता है, जो कि वरिष्ठ नागरिकों के लिए कष्टप्रद होता है। इस समस्या को सुलझाने के लिए **बड़ी ही उदारता के साथ MDH के अध्यक्ष महाशय राजीव जी गुलाटी ने एक सुन्दर गोल्फ कार्ट न्यास को प्रदान की है।**

अतः सभी को जो NMCC आने के इच्छुक हैं, सूचना दी जाती है कि अगर गुलाबबाग के मुख्य द्वार से नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र तक आने में उनको कठिनाई अनुभव होती हो तो कृपया **9928845309** या **9314535379** मोबाइल नम्बरों पर सम्पर्क करें। मुख्य द्वार पर गोल्फ कार्ट भेज दी जाएगी। जिस पर आप बैठकर आ सकेंगे।

-नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र प्रबन्धन

धार्मिक कर्मकाण्ड और आर्यसमाज

प्रत्येक धर्म में सच्चाई आदि गुणों को व्यवहार में लाने की जहाँ सदाचार वाली बात होती है, वहाँ कुछ बातों, चीजों पर विश्वास लाया जाता है। कुछ विचारों को मान्यता दी जाती है अर्थात् माना जाता है। इसके साथ सभी धर्मों में अपनी तरह का धार्मिक कर्मकाण्ड भी होता है। इस शब्द का अर्थ है- धर्म के रूप में कुछ कर्म करना। जैसेकि अपने धर्मग्रन्थ का विशेष ढंग से पाठ करना। मन्त्र, शब्द विशेष का जाप, स्मरण, ध्यान करना। अपने इष्टदेव की विशेष वस्तुओं से पूजा करना। किसी व्रत को रखना अर्थात् किसी विशेष समय भोजन न करना और विशेष समय पर विशेष वस्तु ही खाना। किसी निश्चित दिन पर विशेष स्थल पर जाना, वहाँ स्नान करना।

आर्यसमाज धार्मिक कर्मकाण्ड को सड़क के बोर्डों की तरह प्रेरणा देने वाले, राह बताने वाले के रूप में मानता है। धर्म की असली पहचान सच्चा-सुच्चा ईमानदार होना ही है। **आर्यसमाज की दृष्टि से यदि व्यक्ति सदाचारी नहीं बनता, उसकी ओर ध्यान नहीं देता तो पूजा-पाठ, व्रत-तीर्थ का अपने आप में कोई लाभ नहीं** अर्थात् यह कर्मकाण्ड हृदय को शुद्ध करने के लिए और सच्चा-सुच्चा होने की प्रेरणा देने के लिए ही होता है। अतः इसकी अपने आप में स्वतंत्र सत्ता नहीं माननी चाहिए।

आर्यसमाज में धार्मिक कर्मकाण्ड के रूप में ईश्वर भक्ति के लिए ब्रह्मयज्ञ=सन्ध्या का विधान है। जिसमें अनेक वेदमंत्रों द्वारा ईश्वर के स्वरूप को स्मरण करते हुए प्रभु से जुड़ने का यत्न किया जाता है। ईश्वर सर्वव्यापक और नित्य है, अतः ईश्वर के दर्शन के लिए ईधर-उधर जाने की जरूरत नहीं है। परमात्मा अभौतिक रूप में सबके हृदयों में विराजमान है। अतः पूजा के लिए किसी बाहर की चीज की जरूरत नहीं है। अपने मनपसन्द मन्त्र या भजन द्वारा सीधे अपने हृदय में प्रभु से जुड़ने का यत्न करना चाहिए। **यही स्मरण ध्यान का सरल मार्ग है। शुद्ध निराकार परमात्मा को नहलाना, वस्त्र पहनाना आदि नहीं हो सकता**। अतः आर्यसमाज इस प्रक्रिया को नहीं करता। हाँ! उस महान् दाता के उपकारों को स्मरण करते हुए धन्यवाद कृतज्ञता ज्ञापन के रूप में हमें पूजा करनी चाहिए, जिससे हमारे अन्दर आत्मबल, आत्म-विश्वास उभरे।

आर्यसमाज ब्रह्मयज्ञ के साथ देवयज्ञ=अग्निहोत्र भी करता है। जिसमें सर्वप्रथम 'एक पन्थ दो काज' के अनुसार वेदमन्त्रों से ईश्वर की स्तुति-प्रार्थना होती है। उन वेदमन्त्रों में आता है कि ईश्वर किस प्रकार

संसार की एक-एक प्राकृतिक चीज को बना और चला रहा है। फिर अग्नि जलाकर उसमें शुद्ध देशी घी और हवन सामग्री की मन्त्रों के साथ आहुति दी जाती है। जैसे पाकशाला में अग्नि के सम्पर्क के भेद से पकने वाली चीज के स्वाद में अन्तर आ जाता है। तभी तो उबली रेत में भुंजी, अंगारों पर सिकी शक्करकन्दी, छल्ली (भुट्टा) के स्वाद में कितना अन्तर होता है। ऐसे ही अग्नि अपने में डाले हुए सुगन्धित, दुर्गन्धनाशक पदार्थों से वायु मण्डल को दुर्गन्ध रहित और सुगन्धित बना देती है। शुद्ध जल-वायु ही रोग दूर कर स्वास्थ्य देती है।

आर्यसमाज जहाँ हृदय में प्रभु से जुड़ने को भक्ति पूजा मानता है, वहाँ हवन द्वारा जलवायु को शुद्ध करने वाले धार्मिक कर्मकाण्ड को स्वीकार करता है। ये धार्मिक कर्म स्पष्ट और सार्थक हैं। आर्यसमाज ऐसे कर्मकाण्ड को नहीं मानता, जो बाहर स्पष्ट रूप में होने पर भी किसी प्रकार के फल को नहीं देता। जैसे कहीं सफाई करने पर उसका वहाँ स्पष्ट प्रभाव सामने आ जाता है। ऐसे ही जिन धार्मिक कर्मों को बाह्य रूप से करने पर भी फल, प्रभाव स्पष्ट नहीं होता। वे व्रत, तीर्थ आदि अपने परिणाम की दृष्टि से विचारणीय हैं। किसी कर्म की सार्थकता से उसके परिणाम, प्रभाव, लाभ का बोध होता है। जिन कर्मों का अपने मूल उद्देश्य से सीधा सम्बन्ध, तालमेल, कार्य कारण भाव है, वे ही सार्थक हैं। जैसे बीज को फलता-फूलता करने के लिए गुडाई, सिंचाई, सम्भाल आदि का सीधा सम्बन्ध होता है। ऐसे ही धार्मिक कर्मकाण्ड का अपने मूल उद्देश्य से सीधा सम्बन्ध होना चाहिए। तभी वे सार्थक कहे जा सकते हैं।

इस विवेचन से स्पष्ट हो जाता है कि आर्यसमाज प्रमाण-तर्क संगत, व्यवहारिक सच्चाईयों का प्रचार करता है। इसलिए सभी सत्य (=यथार्थ, छल रहित) व्यवहार चाहने वालों से निवेदन है कि वे आर्यसमाज की बातों पर बिना पक्षपात और पूर्व-आग्रह के विचार करके सच्चाई को समझें और उस को अपनाने का यत्न करें।

इसके साथ जीवन में जो-जो बातें बाधक, निरर्थक हैं, आर्यसमाज ऐसे निरर्थक धार्मिक कर्मकाण्ड और कुरीतियों का कभी समर्थन नहीं करता। जैसे कि मृतक श्राद्ध, चौबर्सी, पौधे-वृक्षों पर दिया जलाना, धागे-कपड़े बाँधना। इसीलिए आर्यसमाज का आठवाँ नियम है- 'अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।' यहाँ अविद्या, शब्द=अज्ञान, अन्धविश्वास, उलटे रिवाज, कुरीति, अन्धपरम्परा, रूढ़ि-वादिता, गलत बात का प्रतीक है और विद्या-सच्चाई, नीति, अध्यात्म, सही बात-ढंग, सार्थक तत्व व्यावहारिक सिद्धि का वाचक है। हम अपने चारों ओर रोज देखते हैं कि कहीं भूत-प्रेत बाधा, डायन, घोषणा, अनमेल विवाह, दहेज प्रथा, भ्रूण-हत्या का ताण्डव है और कहीं बलि प्रथा से फल की सिद्धि, नशा-जुआ, मौजमस्ती जैसी कुरीतियाँ पैर जमा रही हैं। ऐसी हानिकारक बातों का आर्यसमाज हर तरह से विरोध करता है। क्योंकि ये बातें वैयक्तिक और सामाजिक जीवन में बाधाएँ खड़ी करता है। इन सबके दुष्परिणाम आए दिन दैनिक पत्रों में भी छपते रहते हैं। ऐसे ही धार्मिक कर्मकाण्ड के नाम पर हमारे यहाँ अनेक चीजें चलती हैं। जिनके करने पर भी कोई परिणाम सामने नहीं आता।

यह कितने आश्चर्य की बात है आज विद्या और विज्ञान का विकास हो रहा है, फिर भी हम स्पष्ट रूप से निरर्थक रिवाजों में उलझे हुए हैं। बाधक बातों से बार-बार ठोकर खाते हुए भी उन्हीं को करते हैं।

- आचार्य भद्रसेन
१८२, शालीमार नगर, होशियारपुर (पंजाब)
चलभाष- ९४६४०६४३९८

ज्ञान को धर्म की आत्मा माना जाए तो कर्म उसका शरीर होगा। आत्मा और शरीर के स्वरूप और सम्बन्ध पर विचार करें तो कहा जायेगा कि आत्मा के बिना शरीर का कोई अस्तित्व ही नहीं। उधर शरीर के बिना आत्मा अनभिव्यक्त रहता है, अर्थात् शरीर के माध्यम से ही आत्मा अभिव्यक्ति पाता है या अभिव्यक्त होता है। प्रकृत में भी ज्ञान और कर्म एक-दूसरे के पूरक हैं। ज्ञान नहीं तो कर्म का कोई अस्तित्व ही नहीं तथा कर्म के बिना ज्ञान की अभिव्यक्ति नहीं। केवल आत्मा या केवल शरीर जैसे अधूरे रहते हैं या यों कहें कुछ भी फलप्रद नहीं होते, उसी प्रकार कोई व्यक्ति धर्म सम्बन्धी ऊँचे-से-ऊँचे ज्ञानार्जन में लगा रहे अथवा ज्ञान की उपेक्षा करके केवल कर्म करने में ही व्यस्त रहे तो धर्म का आधा हिस्सा ही पकड़ा हुआ माना जायेगा। **इसलिए कोई व्यक्ति धर्म से सुख चाहता है तो ज्ञान और कर्म दोनों को साथ-साथ लेकर चलना होगा।**

यहाँ ज्ञान से तात्पर्य है जगत् और जीवन के बीच सामन्जस्य या सन्तुलन स्थापित करने वाले उन नियमों की जानकारी, जिनकी परिणति जीवन में सुख के रूप में होती है। उन नियमों में से कुछ नियम तो ऐसे होते हैं जो दूसरों से सम्बन्ध रखते हैं तथा कुछ केवल अपने से ही। अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, दान व दया का सम्बन्ध प्रायः दूसरों के साथ है। व्यक्ति यदि अकेला हो तो धर्म के इन रूपों की प्रायः कोई आवश्यकता ही नहीं रह जायेगी। मुख्यरूप से दूसरे व्यक्तियों के साथ सम्बन्ध में ही हिंसा-अहिंसा, सत्य-असत्य, चौर्य-अचौर्य, ब्रह्मचर्य-अब्रह्मचर्य, परिग्रह-अपरिग्रह, दान-अदान, दया व क्रूरता का अर्थ समझा जा सकता है। अर्थात् पारस्परिक सम्बन्ध में ही इन उपयुक्त विविध नियमों का स्वरूप पूर्णतः प्रकट हो सकता है। दूसरे शौच-सन्तोष-तप-स्वाध्याय-ईश्वरप्रणिधान, ये धर्म के इस प्रकार के रूप हैं जो प्रायः स्वयं व्यक्ति से सम्बन्ध रखते हैं। व्यक्ति केवल अकेला हो तो भी इनकी आवश्यकता है या इन शब्दों के द्वारा संकेतित अर्थ की प्रयोजनीयता है। पवित्रता, सन्तोष आदि के चरितार्थ होने के लिए सामाजिक पारस्परिकता की आवश्यकता नहीं है बल्कि ये तो व्यक्ति की निजी वस्तुएँ हैं। इन गुणों के परिप्रेक्ष्य में व्यक्ति को स्वयं के द्वारा स्वयं का मूल्यांकन करना होता है।

इसी प्रकार धैर्य-क्षमा-मनोनिग्रह-इन्द्रियसंयम, उत्तम

विद्या या शिक्षा, अक्रोध आदि विशिष्ट गुण भी धर्म के स्वरूप को प्रकट करने वाले कहे जाते हैं। बुद्ध ने इन सभी नियमों को 'शील' इस शब्द से अभिहित किया है। सार रूप में कहें तो कहना होगा कि जीवन और जगत् (चाहे वैयक्तिक हो या सामाजिक) जिन नियमों के ऊपर टिका हुआ है, जिनके न होने से व्यक्ति का स्वरूप ही बिखर जाता है, सर्वथा विखण्डित हो जाता है, उन नियमों का नाम है 'धर्म'। हर वस्तु का अपना एक धर्म होता है। उसी के आधार पर उस वस्तु का टिकाव या ठहराव होता है। यदि वह धर्म न रहे तो वह वस्तु भी न रहेगी। जैसे अग्नि का धर्म है उष्णता,

मधु का धर्म है मिठास, सूर्य का धर्म है ऊर्जादान। इसी प्रकार मनुष्य का भी एक धर्म है जिसको 'मनुष्यता' नाम से प्रकट किया जाता है। मनुष्यता में जिन-जिन अर्थों का सामवेश है वे हैं-

धृति-क्षमा-इन्द्रियनिग्रह-मनोनिग्रह-सहयोग-शान्ति इत्यादि।

यह हुआ धर्म का ज्ञान पक्ष। इसे अब कर्म के रूप में प्रकट करना होता है। ज्ञान धर्म का बौद्धिक स्वरूप है तो कर्म होगा व्यावहारिक स्वरूप। कोई व्यक्ति धर्म की उत्तम से उत्तम व्याख्या कर दे, बुद्धि के द्वारा अच्छी प्रकार समझ ले और दूसरों को भी समझा दे, पर यदि वह व्याख्या कर्म में नहीं उतर पा रही, कर्म के साथ सुसंवादी न होकर विसंवादी है, तो कहना होगा कि धर्म का शरीर प्रकट नहीं हो रहा या नहीं हो पा रहा। और शरीर के बिना आत्मा से क्या लाभ उठाया जा सकता है? कुछ नहीं। इस विषय पर थोड़ा भी ध्यान दें तो बहुत सरलता से समझ में आ जाता है कि शरीर के बिना आत्मा की स्थिति वैसी ही है जैसे विद्युत् तो है पर उसके प्रवाहित होने के लिए आगे कोई यन्त्र नहीं है- बल्ब, पंखा, कोई बड़ी मशीन इत्यादि। विद्युत् को चरित्रार्थ होने के लिए अवश्य ही कोई यन्त्र चाहिए। तद्वत् धर्म के स्वरूप को जो बौद्धिक-पक्ष 'ज्ञान रूप' है उसे भी सफल होने के लिए कर्मरूपी ढाँचे की आवश्यकता है, जहाँ ज्ञानरूपी विद्युत् कर्मरूपी यन्त्र में प्रकट हो सके। धर्म के ज्ञान व कर्म के पारस्परिक सम्बन्ध को इस रूप में देख व समझकर यदि लाभ उठाया जाए तो ही धर्म हमें अपना सम्पूर्ण लाभ दे सकता है। वे लोग भी अधूरे ही रहते हैं जो कर्म करने में तो अन्धा-धुन्ध लगे रहते हैं, पर ज्ञान को कोई महत्त्व नहीं देते। उस अवस्था में उनके कर्म धर्म के विरुद्ध भी जाते रहते हैं। इसलिए उनको दुःखरूपी फल भोगना ही पड़ता है।

❑❑❑

साभार- अन्तर्जाल

सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो। सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु, कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके, एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है- सत्यार्थप्रकाश के प्रचार हेतु कृपया निम्नानुसार सहयोग कर लागत मूल्य से आधी कीमत में सत्यार्थप्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ के कवर पर दिया जावेगा।

1000 प्रतियों के प्रकाशन हेतु 25000 रुपये का दान देने का श्रम करें। 10 प्रतियाँ निशुल्क आपके पास भेजी जाएँगी।

आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अन्तर्गत करमुक्त होगा। राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, उदयपुर खाता क्रमांक 310102010041518, IFSC-UBIN 0531014 में जमा कर सूचित करें।

निवेदक

अशोक आर्य — अध्यक्ष-न्यास
भवानीदास आर्य — मंत्री-न्यास
डॉ. अमृत लाल तापड़िया — संयुक्तमंत्री-न्यास

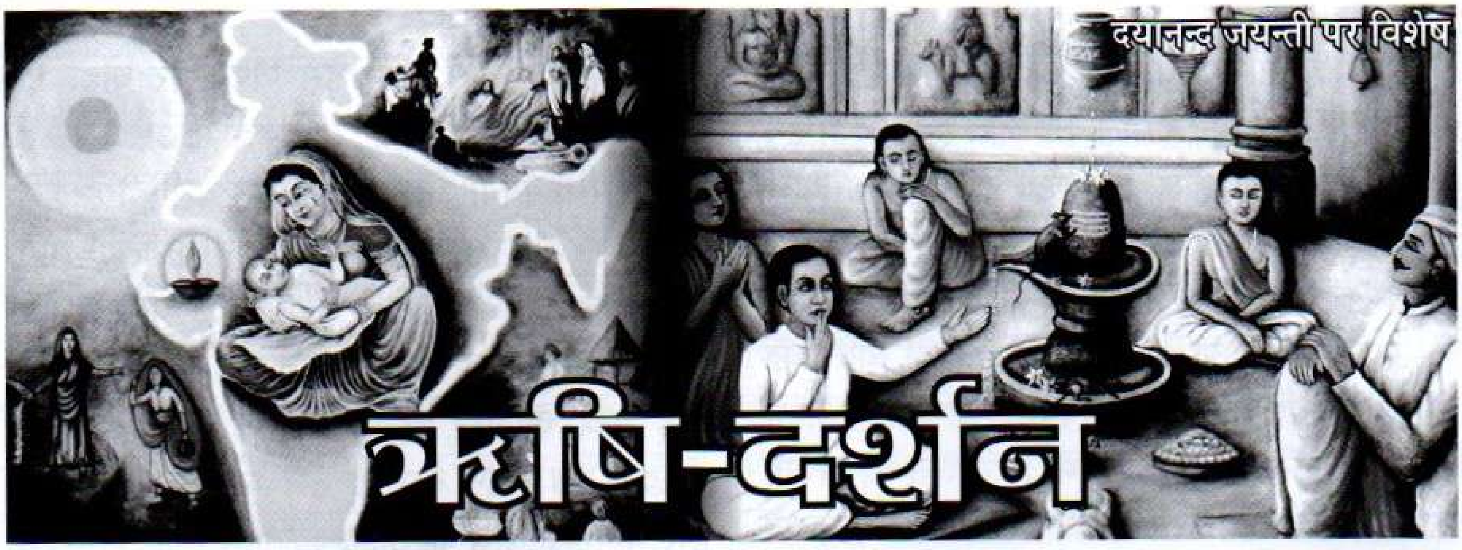

जन्म

ऋषि दयानन्द की जन्मभूमि होने का गौरव गुजरात प्रान्त को है। पिता जन्म के ब्राह्मण थे, और भूमिहारी तथा जमींदारी का कार्य करते थे। शिव के बड़े भक्त थे। शिव-रात्रि के दिन बालक को मन्दिर में ले गए और उसे उपवास करा जागरण का आदेश दिया। जब बड़े-बड़े शिव-भक्त सो गए, यह भावी ऋषि प्रयत्न पूर्वक जागता रहा । गीता के कथनानुसार

या निशा सर्वभूतानां तस्याँ जागर्ति संयमी।

शिवरात्रि

इनके हृदय में भक्ति का नया भाव उदय हुआ था। वे इसी रात में शिव को रिझा देना चाहते थे। नींद आती पर यह पानी के छींटों से उसे दूर भगाते। इतने में एक चूहे ने सचेत किया। उस क्षुद्र पशु को महान् पशुपति के आगे उद्धत होता देख कर विचार आया 'हो न हो, यह शिव नहीं।' दूसरों का व्रत भंग आलस्य ने किया था इनका तर्क ने। तर्क जीवन की भूमिका था, आलस्य मौत की! शिवरात्रि बीत गई, परन्तु शिवरात्रि की घटना हृदय में गड़ सी गई।

मृत्यु के दृश्य

मूलशंकर के बढ़ते यौवन को दूसरी चेतावनी अपने चाचे और भगिनी की मृत्यु से मिली। चाचे के लाडले थे, उनका वियोग सहा न जाता था। भगिनी को महामारी ने मारा। इन दो मृत्युओं का प्रभाव एक सा नहीं हुआ। प्रथम मृत्यु पर आश्चर्य चकित रहे और पाषाण हृदय की उपाधि पाई, दूसरी पर बिलख-बिलख कर रोए।

शिक्षा और गृहत्याग

मूलशंकर की शिक्षा का प्रबन्ध इनके बाल्यकाल में किया गया था। इन्हें यजुर्वेद कण्ठस्थ था तथा और भी बहुत कुछ पढ़ा-लिखा करते थे। पिता को पता लगा कि बालक पर वैराग्य का भूत सवार है। महात्मा बुद्ध के पिता की तरह इन्हें विवाह की डोरों में फांसने की ठानी। परन्तु ठीक विवाह की रात्रि को मूलशंकर घर से लुप्त हो गये।

वन यात्रा

मूलशंकर की वन यात्रा की कथा बहुत लम्बी है। पहले तो किसी ने ठग लिया। इन्हें शुद्ध चैतन्य नाम देकर नैष्ठिक ब्रह्मचारी बनाया। फिर वह संन्यासी हुए और दयानन्द नाम पाया। योगियों के पास योग साधना सीखते रहे। समाधि का आनन्द लाभ किया। गिरि-गुहाओं में घण्टों बिताए। पुस्तकें खोजीं और उनका अध्ययन किया। मैदानों में सोए, वृक्षों की शाखाओं में विश्राम किया। मूल-कन्द खाकर भूख मिटाई। सार यह कि पूर्ण वनचर का-सा जीवन व्यतीत किया।

गुरु विरजानन्द के चरणों में

३६ वर्ष से ऊपर के थे जब दण्डी विरजानन्द के द्वार पर विद्या वित्त के भिक्षु हुए। वहाँ पहली भेंट यह धरनी पड़ी कि जो पुस्तकें पढ़ी हैं सब यमुना मैय्या के अर्पण करो। हाथ-लिखे पुस्तक बड़ी कठिनता से हाथ आए थे। पर गुरु-मुख का उपदेश भी तो सुलभ न था। जी कड़ा किया और गुरु की आज्ञा पालन की। आदर्श शिष्य आदर्श गुरु के चरणों में आदर्श शिक्षा

प्राप्त कर रहा था। नित्य प्रति यमुना के जल से गुरुजी को स्नान कराते। कुटी में झाड़ू देते, गुरु की सेवा शुश्रूषा करते। गुरु ने एक दिन डण्डे से ताड़ना की, यतिवर ने गुरु-गौरव का प्रसाद मान स्वीकार की। अन्त में दीक्षान्त का समय आया। निर्धन ब्रह्मचारी गुरु दक्षिणार्थ लौंगों की भीख माँग लाया। हा दैव! स्वीकार न हुई। 'क्या भेंट धरूँ?' 'जो तुम्हारे पास हो।' 'मेरे पास मेरे अपने सिवा कुछ नहीं। तो अपना आप भेंट धरो।' भेंट धरी गई। गुरु ने अंगीकार की। वही अपने आपकी भेंट मानो आर्य समाज की स्थापना का प्रथम बीज थी। दयानन्द विरजानन्द का हुआ और विरजानन्द के हाथों सारे संसार का।

पाखण्ड–खण्डनी

अब पुष्कर के मेले में दयानन्द पहुँचता है, कुम्भ के महोत्सव में दयानन्द गरजता है। वेद से उलटे जाते वैदिक धर्मियों को वेद के पथ पर लाना चाहता है। एक ओर सारी भ्रान्त आर्य जाति है, दूसरी ओर अकेला दण्डधारी दयानन्द। 'पाखण्ड खण्डनी पताका' के नीचे खड़ा कौपीनधारी ब्रह्मचारी आते-जाते के लिए अचम्भा था। लोग कहते थे, गंगा के प्रवाह को रोकने का सामर्थ्य इस में कहाँ? स्वयं भगीरथ आएँ तो न रोक सकें।

तपस्या की पराकाष्ठा

ऋषि गरज-गरज कर हार गए। गंगा बहती गई और उस के साथ हिन्दू भ्रान्तियों का प्रवाह भी बहता गया। ऋषि ने डेरा डण्डा उठाया और वनों की राह ली। पूर्ण वीतराग होने का व्रत किया कि कौपीन के अतिरिक्त कोई चीज पास न रखेंगे। महाभाष्य की एक प्रति पास थी, सो भी गुरुवर की सेवा में भेज दी। इसी कौपीन में दयानन्द सोते, इसी में फिरते। नहाकर इसे सूखने को डालते और स्वयं पद्मासन लगाकर बैठे रहते। हिमाछन्न नालों में क्या और जलती रेतों पर क्या दयानन्द का यही पहरावा रहा।

शास्त्रार्थ

कोई दो वर्ष दयानन्द ने इस प्रकार तितिक्षा में काटे। फिर प्रचार में प्रवृत्त हुए। शास्त्रार्थ पर शास्त्रार्थ करते चले गए। हीरा वल्लभ नाम के एक प्रौढ़ पण्डित ने सप्ताह भर संस्कृत में शास्त्रार्थ किया। उनका संकल्प था कि ऋषि से मूर्ति को भोग लगवा कर उठूँगा। ऋषि का पक्ष सुना तो ठाकुर जी को उठा कर गंगा में प्रवाहित किया और मुक्तकण्ठ से माना कि मूर्ति पूजा शास्त्र विरुद्ध है।

ऋषि के उपदेश में जादू था। कंठियाँ उतरवा दीं,

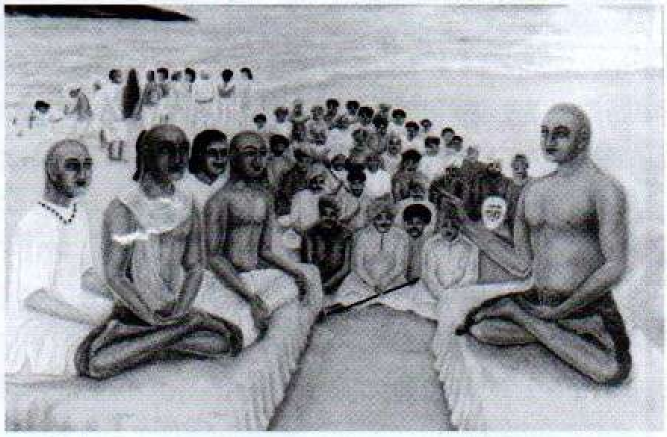

मूर्तियाँ फेंकवा दीं, तिलक छाप की रीति मिटा दी। गायत्री का प्रचार किया। सन्ध्या लिख-लिख कर बाँटी। स्त्रियों को मन्त्रजाप का अधिकार दिया। जाटों राजपूतों को यज्ञोपवीत पहनाए।

आर्य धर्म की जय

चान्दापुर के शास्त्रार्थ में ऋषि ने आर्य जाति के इतिहास में एक नए युग का बीजारोपण किया। आर्य आर्य तो आपस में विवाद करते ही थे। मुसलमानों ईसाईयों से इनकी कभी न ठनी थी। इस से पूर्व प्रथा यह थी कि अहिन्दू हिन्दुओं का खण्डन करें और हिन्दू चुप रह कर सहन करते जाएँ। आर्य धर्म आटे का दिया था कच्चा धागा था, ऋषि ने इस भ्रान्ति को मिटा दिया। तीन दिन बाद शास्त्रार्थ होना था जिस में मौलवियों और पादरियों के विरुद्ध ऋषि ने आर्य धर्म का पक्ष लेना स्वीकार किया था। एक ही दिन में ऋषि ने आर्य धर्म की स्थापना ऐसी दृढ़ता से की कि दूसरे दिन वहाँ प्रतिपक्षियों का चिह्नमात्र भी शेष न था। आर्य धर्म की यह विजय धर्म के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखने योग्य है।

लेखक- पण्डित चमूपति एम.ए.
साभार- ऋषि दर्शन

□□□

स्वास्थ्य

शिशिर ऋतु में स्वास्थ्य

माघ-फाल्गुन मास (१६ फरवरी से १५ मार्च) का समय शिशिर ऋतु का माना गया है। इस ऋतु में आदान-प्रदान जन्य रूक्षता व वायु जनित शीत अधिक होता है, अतः जहाँ वायु कम लगे ऐसे स्थान पर रहना चाहिए। ऊनी वस्त्रों का अधिक प्रयोग करना चाहिए। होंठ फट जाते हैं, पैरों में बिवाई फट जाती हैं। निमोनिया, वातज रोग, शिरः शूल आदि रोग हो सकते हैं। माघ मास में विशेष ठण्ड और फाल्गुन में गुलाबी ठण्ड पड़ती है, अतः इस समय शीत से बचाव आवश्यक है।

दिसम्बर, जनवरी, फरवरी मास अतिशीत के महीने हैं। इसमें जठराग्नि प्रदीप्त होने से हेमन्त व शिशिर ऋतु में बादाम पाक, मूसली पाक, अश्वगंधापाक, ब्राह्म रसायन, सिद्ध मकरध्वज, पूर्ण चन्द्रोदय, लौह भस्म, अभक भस्म, च्यवनप्राश, द्राक्षासव, द्राक्षारिष्ट, द्राक्षावलेह आदि तथा घी, दूध, बादाम, मूंगफली, तिल, गाजर, चना, ईख का रस, नारियल, काजू, पिस्ते, द्राक्षा आदि का सेवन हितकर होता है। तैल लगाने से रुक्षता नष्ट होती है अतः तैल मालिस के पश्चात् उष्ण जल से स्नान श्रेष्ट है। तीखे, कड़वे, कसैले रस वाले तथा बासी पदार्थ नहीं लेने चाहिए। भोजन सात्विक ही करना चाहिए। सात्विक आहार आयु, बल, आरोग्य, सुख और प्रीति को बढ़ाने वाला होता है। जो भोजन अधपका, रसरहित, दुर्गन्धयुक्त बासी और झूंठा है वह अपवित्र तामसी भोजन है। राजस व तामस गुणयुक्त भोजन स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है, सात्विक भोजन ही स्वास्थ्य के लिए हितकर है। आयु, बल बुद्धि को बढ़ाने वाले पदार्थ दूध, घी, फल, शाक, बाजरा, गेहूँ, जौ, चना, मूंग चावल, मक्खन आदि जो पवित्र एवं स्वच्छ हैं, वे आहार के योग्य है। अन्य पदार्थ जो रोग, दुःख, शोक, चिन्ताकारक हैं जैसे- मिर्च, अचार-चटनी, इमली, मांस, अण्डे, मद्य (शराब) उच्छिष्ट भोजन आदि आहार के अयोग्य हैं। स्वादहीन, दुर्गंधयुक्त, गरीष्ठ, सड़ा-गला व रूक्ष भोजन नहीं करना चाहिए। अल्पभोजन व अति भोजन दोनों स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हैं।

शिशिर ऋतु में हरीतकी (हाड) का प्रयोग

इस ऋतु में हरड़ के चूर्ण में चतुर्थांश छोटी पीपल का चूर्ण मिलाकर लेने से शीत व्याधि, शीत ज्वर, सर्दी, खांसी, सीने का दर्द, अजीर्ण, मन्दाग्नि ठण्ड लगकर चढ़ने वाला ज्वर व बल्गमी खांसी में लाभ होता है। पीपल चूर्ण दूध में डालकर पीने से ज्वर ठीक होता है।

यज्ञ चिकित्सा

शिशिर ऋतु में अखरोट, कपूर, बायविडंग, राल, मुण्डी, मोच रस, गिलोय, मुनक्का, रेणुका, काले तिल, केसर, कस्तूरी, चन्दन, चिरायता, छुहारे, तुलसी के बीज, गुग्गुल, चिरौंजी, काकड़ा सिंगी, खांड, शतावर, दारू हल्दी, शंखपुष्पी, पद्माख, कौंच के बीज, जटामांसी, भोजपत्र, गूलर या बड़ की समिधा, मोहन भोग आदि के द्वारा यज्ञ करने से रोगों से बचाव होकर शरीर स्वस्थ बना रहता है।

जल छानकर व उचित मात्रा में बार-बार थोड़ा-थोड़ा पीने से जठराग्नि प्रदीप्त होकर भोजन ठीक से पचता है। एक ही बार अधिक मात्रा में जल पीने से भोजन का पाचन ठीक प्रकार से नहीं हो पाता है। अत्यल्प मात्रा में पानी पीने से भी अपचन होता है।

प्रातः कालीन स्नान अग्नि दीपक, मन को प्रसन्न करने वाला, आयुवर्धक, उत्साहवर्धक, बलदायक, खुजली को नष्ट करने वाला, त्वचा के मल व शरीर की थकावट को दूर करता है। पसीना, तन्द्रा, प्यास, दाह और पाप नाशक है। स्वस्थ व्यक्ति के लिए उष्ण जल की अपेक्षा शीतल जल से स्नान विशेष हितकारी होता है। शीतल जल के स्नान से त्वचा की अग्नि अन्दर प्रविष्ट होकर जठराग्नि को प्रदीप्त कर देती है। शीतल ताजे जल से स्नान रक्त पित्त को ठीक करता है। नेत्रों के लिए हितकर है। गर्म पानी सिर पर डालकर स्नान करना नेत्रों के लिए हानिकारक है व इससे सिर के बाल कमजोर होते हैं। प्रातः काल का स्नान बुरे स्वप्नों को नष्ट करने वाला, पापहारक, अत्यन्त पवित्रता कारक, मलनाशक, तेजवर्धक, रूप को निखारने वाला, शरीर को सुख देने वाला तथा थकावट दूर करने वाला होता है।

लेखक- वेदमित्र आर्य
सेवानिवृत्त चिकित्साधिकारी, आयुर्वेद विभाग, राज.

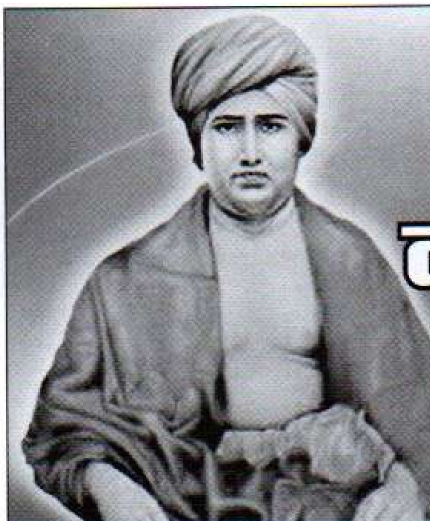

कहानी दयानन्द की

कथा सरित

अजमेर प्रवास में स्वामी जी को दयानन्द की अपेक्षा दण्डी जी के नाम से लोग ज्यादा जानते थे और एक बात उनके विषय में काफी फैल चुकी थी कि जो वेद भारत से लुप्त हो गए थे दण्डी जी के प्रभाव से भारत में उनका पुनः प्रचार हुआ है। यहाँ पर स्वामी जी का पादरी जान रॉबिंसन से विचार-विमर्श हुआ। कई बार यह विचार होता है कि स्वामी जी की देहयष्टि कैसी थी तो रॉबिंसन ने उसका वर्णन किया है वह हम यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं। 'उनका शरीर विशाल सुगठित और दर्शनीय था एक गेरुआ वस्त्र उनके कटि प्रदेश में और एक ढीले ढंग से उनके शरीर पर पड़ा हुआ था।' रॉबिंसन लिखते हैं कि वह उन्हें तीक्ष्ण बुद्धि और प्रभावशाली व्यक्ति प्रतीत हुए और यह अच्छी भाँति उनके समझ में आ गया था कि वह अपने अनुयायियों को क्यों आकर्षित करते थे? इसका तात्पर्य यह हुआ कि रॉबिंसन की निगाह में स्वामी जी अपने विशाल भव्य व्यक्तित्व और पहनावे के कारण अनुयायियों को आकर्षित करते थे। आश्चर्य की बात है कि पुणे प्रवचन के समय में उनके घोर विरोधी विष्णु चिपलूणकर शास्त्री ने भी लगभग ऐसी कुछ भावना व्यक्तित्व की थी जिसका अभिप्राय निकलता है कि स्वामी जी में वैसे तो कोई विशेष गुण प्रतीत नहीं होते थे परन्तु उनकी जो भव्य आकृति, सतेज चेहरा एवं रेशमी गेरुआ वस्त्र थे उनके कारण श्रोताओं पर उनका प्रभाव पड़ता था। जो भी हो कम से कम इन दो वक्तव्यों से हमें स्वामी जी की भव्य आकृति व दिव्य व्यक्तित्व के बारे में ज्ञात होता है। अजमेर में स्वामी जी का एक मौलवी से भी शास्त्रार्थ हुआ।

पादरी ग्रे रॉबिंसन और शूल ब्रेड से स्वामी जी का जो शास्त्रार्थ हुआ था उसके मध्य किसी बात पर चिढ़कर के शूल ब्रेड ने कहा कि ऐसी बातों से आप कभी भी कारावास में चले जाएंगे। उस पर दयानन्द ने उत्तर दिया कि **'आप यदि ऐसा कष्ट दिलाएँगे तो मुझे तनिक भी चिन्ता न होगी। मैं कारावास जाने के भय से सत्य को नहीं छोड़ सकता।'**

अजमेर प्रवास के समय ही एक ऐसी घटना सामने आती है जिससे प्रतीत होता है कि स्वामी जी योगज विभूतियों से सम्पन्न थे परन्तु उनके बारे में बताते नहीं थे। श्यामलाल सिंह नाम का एक व्यक्ति स्वामी जी का भक्त था और वह स्वामी जी के लिए अपने घर से दुग्ध भिजवाना चाहता था तो उसने अपने नौकर को बोल दिया। नौकर जब दूध लेकर के जा रहा था तो श्यामलाल सिंह की माँ ने काफी नाराजगी दिखाई। जब उनका नौकर स्वामी जी के पास दूध लेकर के गया तो स्वामी जी ने यह कहकर के दूध वापस लौटा दिया कि **ऐसा चिन्तायुक्त दूध उनको नहीं चाहिए और आगे से उनके लिए ऐसी अनिच्छा से भेजा हुआ दूध कभी न लाएँ।**

यह बात स्वामी जी को कैसे पता चली इसका तो एक ही उत्तर प्रतीत होता है **योगज विभूति।**

यही नहीं स्वामी जी सत्य के निर्धारण के लिए किसी प्रकार के मान अपमान की परवाह नहीं करते थे। अजमेर में उन दिनों रामस्नेहियों के एक महन्त ठहरे हुए थे जहाँ बहुत सी महिलाएँ आती-जाती रहती थीं।

स्वामी जी ने उनको शास्त्रार्थ के लिए कहलाया तो टालने की गरज से रामस्नेही गुरु ने कहा कि स्वामी जी के साथ हमारे उठने बैठने में ना बनेगी। तो स्वामी जी ने कहलवाया कि वे चिन्ता ना करें। वे गद्दी पर ही बैठे रहें, स्वामी जी नीचे बैठ जाएँगे। इतनी बात जब आ गई और ऐसा लगा कि अब शास्त्रार्थ करना ही पड़ेगा तो उस महन्त ने कहलवा दिया कि वे शास्त्रार्थ नहीं करते और वह उसी रात को अपनी मण्डली को लेकर अजमेर से चला गया।

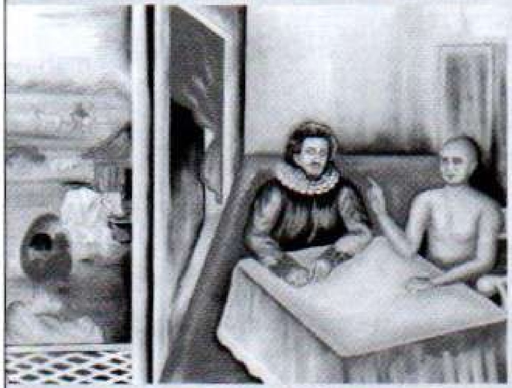

एक अत्यन्त महत्वपूर्ण घटना अजमेर में और हुई वह थी स्वामी जी की और लॉर्ड ब्रुक का गौ रक्षा के बारे में वार्तालाप। अपनी गाड़ी भेज करके ब्रुक साहब ने स्वामी जी को अपने घर पर बुलवाया और लगभग ५ घण्टे उनके साथ गौ रक्षा विषय पर बातचीत हुई। लॉर्ड ब्रुक ने माना कि गौ हत्या हानिकारक है, परन्तु उसका बन्द करना उनके अधिकार में नहीं है। अतः वे लाट साहब से इस सम्बन्ध में बात करें और उन्होंने एक चिट्ठी लाट साहब के लिए लिख करके दी। तो इस प्रकार से स्वामी जी के काफी प्रारम्भिक काल में ही हम देखते हैं कि गौ के प्रति उनके हृदय में अत्यन्त करुणा के भाव थे और वे गौ वंश की रक्षा करना चाहते थे।

प्रस्तुति- नवनीत आर्य
नवलखा महल, उदयपुर

❑❑❑

आजीवन सत्यार्थ मित्र

सत्यार्थमित्र योजना में प्रतिवर्ष 5100 रुपए देने के क्रम में कुछ बन्धु प्रतिवर्ष रिन्यूअल कराने के झंझट से विरत रहना चाहते हैं, अतः न्यास ने अपनी पिछली बैठक में यह निश्चय किया है कि आजीवन सत्यार्थमित्र के रूप में जो भाई बहिन रु.51000 एकमुश्त जमा करा दें तो उनका यह सहयोग आजीवन सत्यार्थमित्र के रूप में मान्य होगा। समर्थ आर्यजन इस दिशा में सकारात्मक सहयोग करने का श्रम करें।

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹११,०००)

श्री रतिराम शर्मा, श्री रामेश्वर दयालु गुप्त; गाजियाबाद, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री सुरेश चन्द्र आर्य, श्री दीनदयाल गुप्त, स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री भवानी दास आर्य, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री नारायण लाल मित्तल, श्रीमती आभा आर्या, श्रीमती शारदा गुप्ता, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, श्री सुधाकर पीयूष, आर्यसमाज गाँधीधाम, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, प्रो. आई. जे. भाटिया; नासिक, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती ओमप्रकाश वर्मा; जयपुर, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री दीपचन्द आर्य; बिजनौर, श्री खुशहालचन्द आर्य, गुप्तदान उदयपुर, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्री मोती लाल आर्य, श्री रघुनाथ मित्तल, श्री जयदेव आर्य, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, श्री नरेश कुमार राणा, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री वीरेन्द्र मित्तल, श्री विजय तायलिया, गुप्त दान दिल्ली, प्रो. आर.के.एरन, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टाँक, श्री विकास गुप्ता, श्री भारतभूषण गुप्ता, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री एम.पी. सिंह, श्री रामप्रकाश छावड़ा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री विवेक बंसल, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, श्री लोकेश चन्द्र टांक, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री प्रह्लादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव, डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरसेन मुखी, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमन सूद, कन्डा घाट (सोलन), माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक), ग्वालियर, डॉ. पूर्णसिंह डबास, नई दिल्ली, श्रीमती सविता सेठी, चण्डीगढ़, श्री बृज बधवा, अम्बाला शहर, श्री हजारी लाल आर्य, उदयपुर, डॉ. सत्यप्रकाश, हरदोई, श्री राजेन्द्रपाल वर्मा, वडोदरा, प्रिन्सीपल डी. ए. वी. एच. जेड. एल. सी. सै. स्कूल, दरीबा (राजसमन्द), आचार्य आनन्द पुरुषार्थी, होशंगाबाद, श्री ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, नोएडा, श्री भरत ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, अहमदाबाद, श्री सुरेन्द्र कर्मचन्दानी, पुणे, डॉ. आनन्द कुमार शर्मा, नई दिल्ली, श्री रमेश चन्द्र गुप्ता, यू.एस.ए., श्री शुद्धबोध शर्मा; श्रीगंगानगर, श्री कन्हैया लाल आर्य, शाहपुरा, डॉ. सत्या पी. वार्ष्णेय; कनाडा, श्री अशोक कुमार वार्ष्णेय; वडोदरा, श्री नागेन्द्र प्रसाद गुप्ता, बगहा (बिहार), श्री गणेशदत्त गोयल, बुलन्दशहर (उ. प्र.), श्री पूर्णचन्द आर्य, कानोड़, श्री वेदप्रकाश आर्य; नई दिल्ली, श्री सत्यनारायण शर्मा; उदयपुर, श्रीमती राधा देवी-रतन लाल राजोरा; निम्बाहेड़ा, श्री सत्यप्रकाश शर्मा; उदयपुर, सुदर्शन कपूर; पंचकूला, श्री देवराज सिंह; उदयपुर, श्रीमती ललिता मेहरा; उदयपुर, श्री कृष्ण लाल डंग आर्य; हिमाचल प्रदेश, श्री जी. राजेश्वर (गौड़) आर्य; हैदराबाद, पुरुषोत्तम लाल मेघवाल; उदयपुर, श्री बलराम जी चौहान; उदयपुर, श्री राकेश जैन; उदयपुर, श्रीमती कमलकान्ता सहगल; पंचकूला, श्री अम्बालाल सनाढ्य; उदयपुर, श्री भँवर लाल आर्य; उदयपुर, श्री वेलजी धनजी भाई; महाराष्ट्र, श्री सज्जनसिंह कोठारी; जयपुर, श्री चेतन प्रकाश आर्य; जोधपुर, ठाकुर जितेन्द्र पाल सिंह; अलीगढ़, श्री घनश्याम शर्मा; जयपुर, श्री मानसिंह चौहान; डूंगरपुर, श्री अजय कुमार गोयल; पानीपत, श्री रामजीवन मिश्र; जयपुर, श्रीमती ममता आर्या; नई दिल्ली, श्री यश आर्य; कोलकाता, श्रीमती संचिता जैन; उदयपुर

मकर संक्रान्ति पर यज्ञ एवं प्रवचन सम्पन्न

आर्य समाज हिरण मगरी, उदयपुर की ओर से १४ जनवरी,२०२४ को मकर सौर संक्रान्ति पर विशेष यज्ञ एवं प्रवचन का आयोजन किया

गया। इस अवसर पर आर्य समाज के मंत्री विद्वान् वेदमित्र आर्य ने पर्व के महत्व पर चर्चा करते हुए कहा कि जब पृथिवी एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश करती है तो उसको संक्रान्ति कहते हैं। छः महीने की इस सूर्य के प्रकाश की अधिकता के कारण उत्तरायण मकर संक्रान्ति का अधिक महत्व है। इस अवसर पर तिल, गुड़ आदि का प्रयोग स्वास्थ्य के लाभदायक है। तिल, गुड़ आदि का दान पुण्यदान माना गया है। डॉ. अमृत लाल तापड़िया, राधा त्रिवेदी, उगन्ता यादव, सुभाष कोठारी, चन्द्रकला यादव, कृष्ण कुमार सोनी आदि ने अपने व विचार एवं भजन प्रस्तुत किये।

इससे पूर्व पण्डित रामदयाल के पौरोहित्य में विशेष यज्ञ सम्पन्न हुआ। ज्योति त्रिवेदी, डॉ. शारदा गुप्ता, अम्बालाल सनाढ्य, रमेशचन्द्र जायसवाल, प्रमिला जायसवाल, सत्य प्रकाश शर्मा आदि यजमानों ने आहुतियाँ दीं। कार्यक्रम का संचालन ललिता मेहरा ने किया।

– रामदयाल मेहरा

श्री जीववर्धन शास्त्री जी को भ्रातृशोक

अत्यन्त दुःखद समाचार है कि दयानन्द सेवाश्रम संघ के माध्यम से वनवासियों के बीच अथक पुरुषार्थ के साथ वैदिक संस्कृति का प्रचार करने में संलग्न और वर्तमान में आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान के यशस्वी मंत्री के रूप में आर्य समाजों को उत्साह पूर्ण ऊर्जा के साथ प्रगति की दिशा में ले चलने के संकल्प के साथ जिन्होंने माँ आर्यसमाज को अपना जीवन समर्पित कर दिया है, ऐसे श्री जीववर्द्धन शास्त्री जी के छोटे भाई का अल्पायु में देहान्त हो गया। यह अत्यन्त वेदना का विषय है। परन्तु विधाता के अटल नियम में मनुष्य परवश ही है। उसकी व्यवस्था को स्वीकार करने के अलावा और कोई चारा नहीं है।

न्यास के सभी न्यासियों की ओर से शास्त्री जी व उनके परिवार के सभी सदस्यों के प्रति संवेदना प्रकट करते हुए हम परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वह दिवंगत आत्मा को अपनी आनन्दमयी गोद में स्थान प्रदान करें और सम्पूर्ण परिवार को इस दारुण दुःख को सहन करने की क्षमता प्रदान करें।

– अशोक आर्य

डॉ. भूपेंद्र शर्मा द्वारा देहदान संकल्प

यज्ञ, योग, आर्य समाज और महर्षि दयानन्द के मन्तव्यों के प्रसारण में पूर्ण रूपेण अपना समय देने वाले भाई भूपेन्द्र जी शर्मा ने अपने साठवें जन्मदिवस के शुभ अवसर पर मृत्योपरान्त देहदान करने का संकल्प कर आवश्यक औपचारिक कार्यवाहियाँ सम्पूर्ण कीं। यह अत्यन्त अनुकरणीय कार्य है। इसके लिए आदरणीय भूपेन्द्र जी का जितना साधुवाद किया जाए वह कम है। भ्राता जी आपको बहुत-बहुत साधुवाद।

– अशोक आर्य

महर्षि दयानन्द सरस्वती की २००वीं जन्मशती के अवसर पर आर्य समाज आबूरोड़ का शताब्दी समारोह सम्पन्न

महर्षि दयानन्द सरस्वती की २००वीं जन्मशती के साथ आर्य समाज आबूरोड़ का शताब्दी समारोह एवं श्री वैदिक कन्या उच्च माध्यमिक विद्यालय, आबूरोड़ एवं दयानन्द पैरेडाइज स्कूल, आबूरोड़ का वार्षिक उत्सव दिनांक ०५ जनवरी २०२४ से ०७ जनवरी २०२४ तक हर्ष और उल्लास पूर्वक मनाया गया।

दिनांक ०५ जनवरी २०२४ को ध्वजारोहण आर्ष गुरुकुल, आबूपर्वत के आचार्य ओम प्रकाश जी आर्य द्वारा किया गया। प्रतिदिन प्रातः काल यज्ञ एवं विद्वानों के प्रवचन एवं भजनोपदेश हुए।

दिनांक ०६ जनवरी २०२४ को अपराह्न ०२:०० बजे से श्री वैदिक कन्या उच्च माध्यमिक विद्यालय, आबूरोड़ की बालिकाओं द्वारा बाल

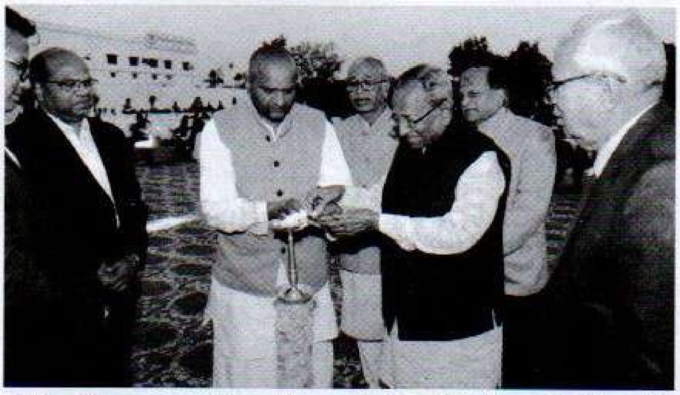

कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। जिसमें बालिकाओं की प्रस्तुति अद्भुत थी।

दिनांक ०७ जनवरी २०२४ को सायं काल ०५:३० बजे से **'अभ्युदय.. ..... एक आगाज'** सांस्कृतिक कार्यक्रम का शुभारम्भ सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के प्रधान, दयानन्द विद्यापीठ न्यास, आबूरोड़ एवं आर्य समाज शिक्षण संस्थान, आबूरोड़ के अध्यक्ष माननीय श्री सुरेश चन्द जी आर्य के मुख्य आतिथ्य एवं श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर के अध्यक्ष श्री अशोक जी आर्य एवं प्रसिद्ध शिक्षाविद् श्री एम. एल. गोयल के विशिष्ट आतिथ्य में दीप प्रज्ज्वलन के साथ प्रारम्भ हुआ। जिसमें दयानन्द पैरेडाइज स्कूल, आबूरोड़ एवं श्री वैदिक कन्या उच्च माध्यमिक विद्यालय, आबूरोड़ के छात्र-छात्राओं द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति दी गई।

इस कार्यक्रम में श्री वैदिक कन्या विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती सुमन शर्मा एवं सी.बी.एस.ई. से मान्यता प्राप्त आवासीय विद्यालय, दयानन्द पैरेडाइज स्कूल के प्रधानाचार्य श्री प्रवीण आर्य द्वारा विद्यालय की प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की गई।

कार्यक्रम के अन्त में आर्य समाज आबूरोड़ के प्रधान श्री मोतीलाल आर्य द्वारा आर्य समाज आबूरोड़ की १०० वर्षों की उपलब्धियाँ बताते हुए समस्त अतिथियों, आगन्तुकों, विद्यालय के समस्त अध्यापक/अध्यापिकाओं एवं अन्य कर्मचारियों का धन्यवाद ज्ञापित किया गया। शान्ति पाठ के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

– प्रवीण आर्य; प्रिन्सिपल-दयानन्द पैराडाईज, आबू रोड

हलचल

पटना उच्च न्यायालय का फैसला भारत संघ की राजभाषा हिंदी में आना शुरू हुआ।

उत्तर प्रदेश; इलाहबाद उच्च न्यायालय की तरह बिहार, राजस्थान और मध्यप्रदेश के उच्च न्यायालयों में भी अंग्रेजी के अतिरिक्त हिन्दी के प्रयोग का प्रावधान है। लेकिन जहाँ इलाहबाद उच्च न्यायालय बहुत लम्बे समय से हिन्दी में निर्णय दिए जाते रहे हैं बिहार में कदम-कदम पर इसके लिए संघर्ष करना पड़ रहा है। मा. प्रधानमंत्री जी, भारत के मा. मुख्य न्यायाधीश भी जनभाषा में न्याय के समर्थन की बात कर रहे हैं। मा. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की पहल और भारत सरकार के प्रयासों से इलाहबाद उच्च न्यायालय तथा कई उच्च न्यायालयों की वेबसाइट पर राज्य की भाषा में निर्णयों का अनुवाद दिया जाने लगा है।

इस बीच माननीय उच्च न्यायालय पटना के न्यायमूर्ति डॉ. अंशुमान जी का एक निर्णय अंधकार में रोशनी बनकर आया। न्यायमूर्ति डॉ. अंशुमान ने भारत के नागरिक विशाल कुमार के नियमित जमानत पत्र की सुनवाई पूर्ण होते ही हिन्दी समर्थक उनके विद्वान् अधिवक्ता इन्द्रदेव प्रसाद से मुस्कुराते हुए पूछा कि क्या हिन्दी आवेदन पर हिन्दी में आदेश लिखवा दें? **इस पर अधिवक्ता बोले कि यदि हिन्दी में आदेश आएगा तो लोगों को आजादी की सी खुशी मिलेगी।** अंग्रेजी नहीं समझने वाले देशवासियों की उदासी सदा के लिए समाप्त हो जाएगी, जिसके परिप्रेक्ष्य में माननीय न्यायमूर्ति ने जैसे ही हिन्दी में आदेश लिखवाना शुरू किया, उनके आशुलिपिक को उनके आदेश लिखने में बहुत कठिनाई होने लगी और तब न्यायमूर्ति बोले कि जो आशुलिपिक हिन्दी में आदेश लिख सकता हो, उनको बुलाओ। उनके आदेशानुसार हिन्दी आशुलिपिक को बुलाया गया और हिन्दी आशुलिपिक के आने पर उन्होंने खुली अदालत में हिन्दी में आदेश लिखवा दिया। जिस मामले में हिन्दी में आदेश पारित हुआ, वह मामला माननीय न्यायमूर्ति डॉक्टर अंशुमान के न्यायालय में दिनांक ११ अक्टूबर २०२३ को क्रम संख्या- ५६ पर लगा हुआ था, जिसका विविध अपराध वाद संख्या ६४६३५/२०२३ है।

अब जबकि एक शुरुआत हुई है तो यह आशा है कि पटना उच्च न्यायालय में आगे भी हिन्दी में निर्णय दिए जाने का सिलसिला जारी रहेगा। लेकिन इसके लिए अधिवक्ताओं को और अधिक प्रयास करने होंगे। राज्य सरकार का भी दायित्व है कि जनहित में सरकारी वाद हिन्दी में रखवाए जाएँ और अदालत में इसके लिए सभी व्यवस्थाएँ की जाएँ।

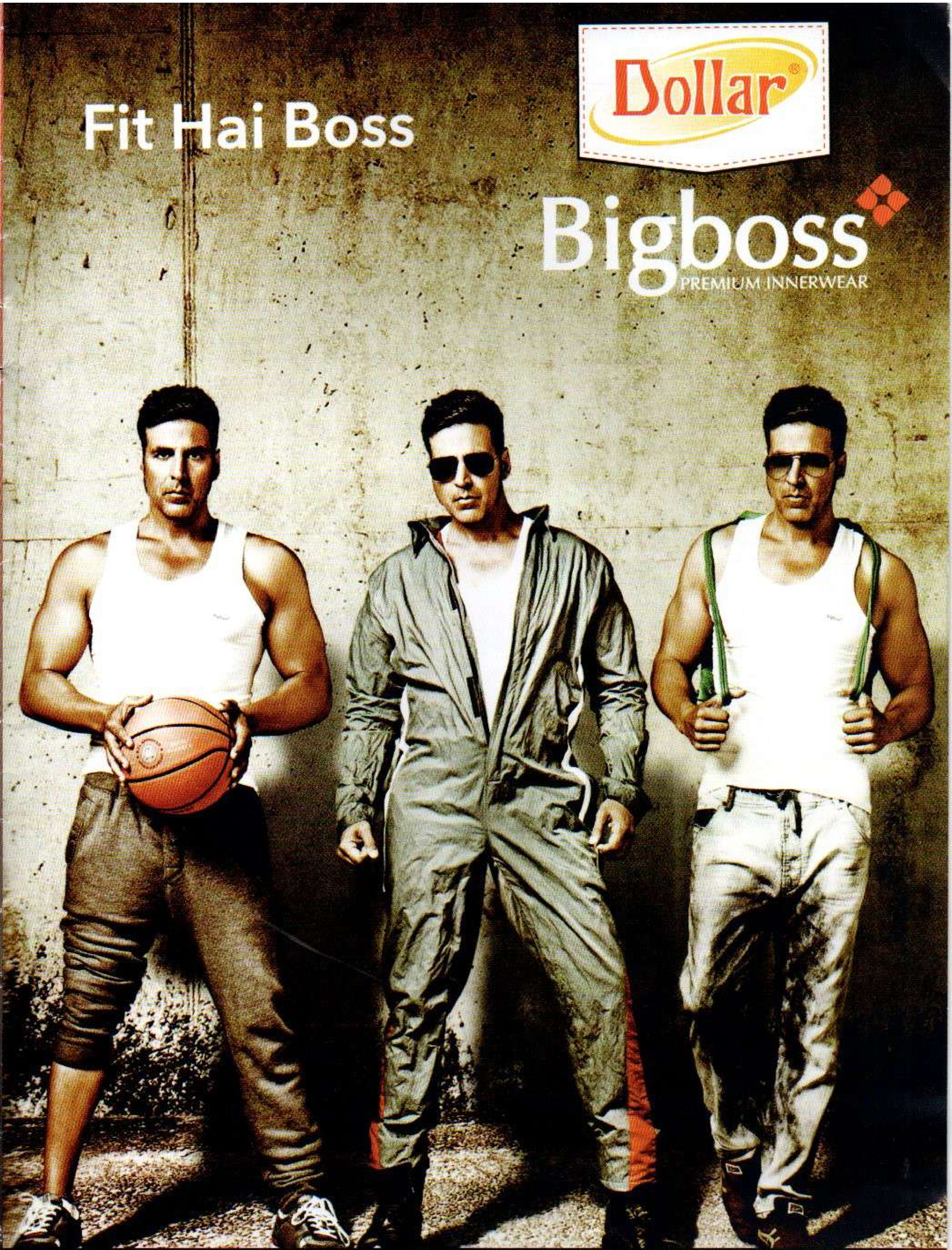
Fit Hai Boss
Dollar
Bigboss
PREMIUM INNERWEAR

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 February-2024 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2021-2023

सत्योपदेश के विना अन्य कोई भी मनुष्य जाति की उन्नति का कारण नहीं है।

सत्यार्थ प्रकाश; भूमिका पृष्ठ ४

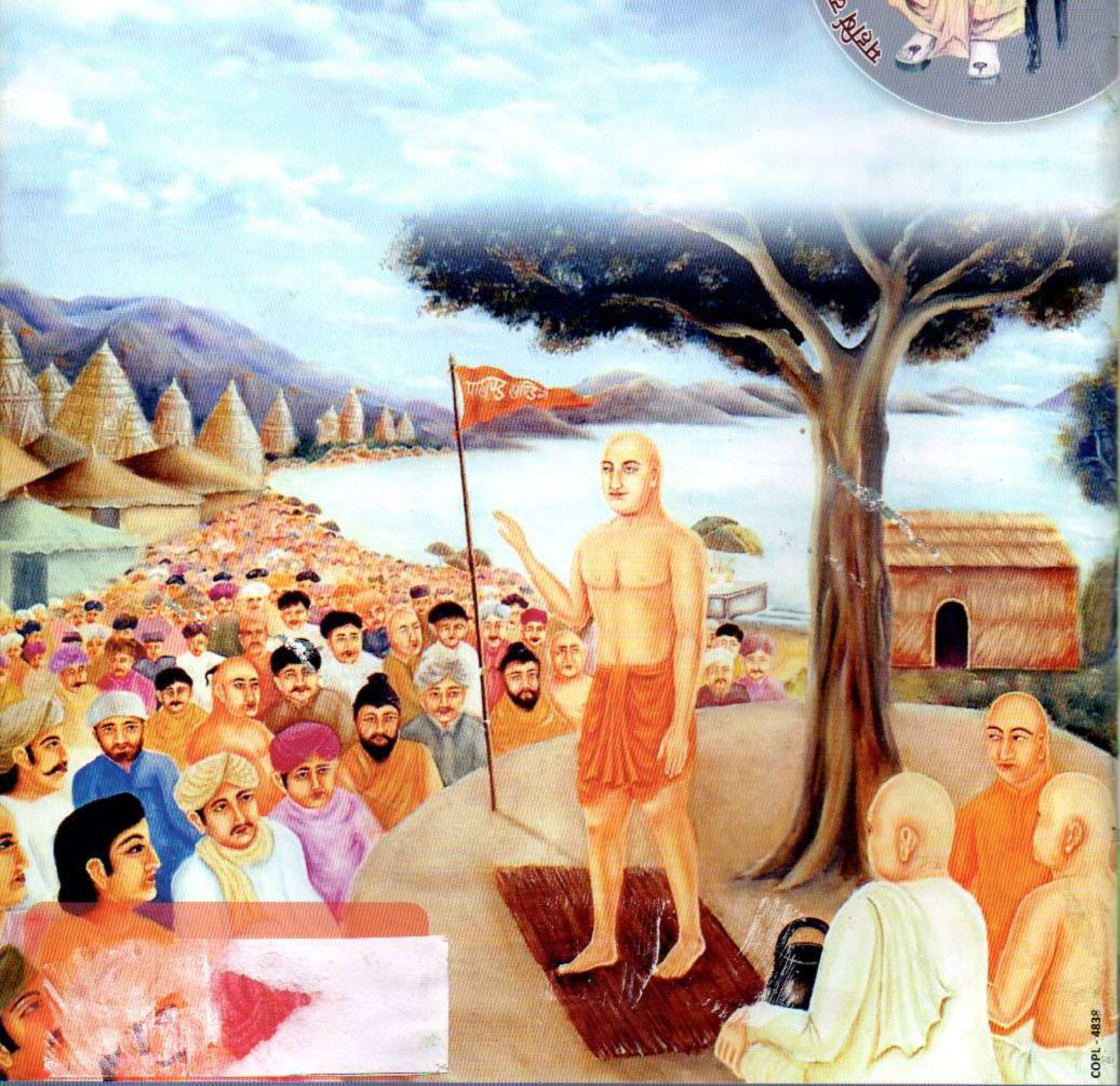

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा निदेशक मुकेश चौधरी, चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित प्रेषण कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक अशोक कुमार आर्य

मुद्रण दिनांक- प्रत्येक माह की ३ तारीख | प्रेषण दिनांक- प्रत्येक माह की ७ तारीख | प्रेषण कार्यालय- मुख्य डाकघर, चेतक सर्कल, उदयपुर